वर्ष 29 | वैशाख-ज्येष्ठ | मई-2024 | अंक 05 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026
मूल्य 10/- रुपये
मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

...इक्षु रस से किया पारणा आखातीज महान...
...जय जय आदिनाथ भगवान...

अक्षय तृतीया - वर्षीतप पारणोत्सव

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नम:

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

इसी संसार के अच्छे-बुरे लोगों के मध्य रहते हुए मानवतावाद के प्रबल समर्थक भगवान श्रीमहावीर ने सम्पूर्ण मानव समाज को सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अचौर्य आदि अनेक अलौकिक एवं अभिवंद्य भावों की दिव्य कुंजी प्रदान की। उनके अनुपम एवं अभिनीत कार्यों के पीछे कोई अदृश्य शक्ति सहयोगिनी नहीं थी; अपितु आत्मबल, आत्म-संयम व इन्द्रिय-निग्रह आदि विविध गुणों को आत्मसात कर लेना ही उनकी सफलता का मूल कारण है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्खा-रक्खास-किन्नर।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं॥

देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर-ये सभी उस ब्रह्मचारी को नमस्कार करते हैं, जो दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करता है। - **उत्तरा.सूत्र, 16.16**

पाथेय *हे प्रभु, तुम्हारे प्रति मेरी अभीप्सा से धारण कर लिया है एक संगठित सुगंधित एवं पूर्ण विकसित गुलाल के फूल का आकार और मैं इसे दोनों हथेलियों में लेकर, और बांहें फैलाकर इसे करता हूं, तुम्हें समर्पित और तुमसे याचना करता हूं ''यदि मेरी समझ सीमित हो तो उसे विस्तृत करो, यदि मेरा ज्ञान धूमिल हो तो उसे प्रदीप्त करो, यदि मेरा हृदय उत्साह से रिक्त हो तो उसे रोशन करो, यदि मेरा प्रेम न्यून हो तो उसमें निष्क्रम वृद्धि करो उसे गहन बनाओ, यदि मेरी भावनाएं अज्ञ एवं अहंग्रस्त हो तो उन्हें सत्य के प्रति सचेतन बनाओ और मेरा यह मैं जो है प्रभु तुमसे मांग कर रहा है यह मांग नहीं है अन्य सैकड़ों के बीच खोया हुआ एक क्षुद्र व्यक्तित्व। यह तो समूची पृथ्वी है जो उत्साह से भरकर तुम्हारी अभीप्सा करती है, तुमसे याचना करती है। ध्यानावस्था की परम नीरवता एवं शान्ति में सब कुछ बन गया है वृहद और तुम अपने वैभव की अपूर्ण शोभा के साथ हुए हो प्रगट।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 वैशाख-ज्येष्ठ मई 2024 अंक-5

विषय सूची

1-	शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2-	विषय सूची	4
3-	जीवन अमृत की बूंद : ऐसे सहज कर रखिऐं-(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4-	समभाव सामायिक	6
5-	अक्षय तृतीया पर्व की महिमा, पांच प्रकार के आचार ?	7-9
6-	गुस्सा उतारने से पहले जरा सोचें तो ??- स्नेह दीप, आठ प्रभावक ? जब गुरु वंदन नहीं करने की पांच स्थितियाँ ?	10
7-	वर्षीतप की महिमा.... जिन शासन की गरिमा- आ.हेमचन्द्र सूरीजी म., आप क्या कर सकते है.....	11-12
8-	उत्सर्पिणी काल संबंधी छः आरो का स्वरुप , क्या आप जानते हो ????, सात कुलकर कर ?	13-14
9-	अष्टमंगल- एक विवेचन-श्री उपेन्द्रमुनि शास्त्री, गुरु है भगवान का रुप- श्री धर्माचार्य बहुमान, पांच प्रकार से आयुष्य टूटता है ?	15-16
10-	अंतिम केवली श्री जंबुस्वामीजी- श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी, चार कथाएं चार संज्ञायें बढ़ाती है...!, जरुरी है क्या परिवर्तन ?	17-19
11-	आरती की रचना किसने की...!, संसार के संयोग क्षणिक-श्री वैराग्य शतक	20
12-	आगमोद्धारक तीर्थ सूरत और आगमवेत्ता सागर सूरिजी- शांतिलाल सगरावत	21
13-	ब्याज की तरह प्रतिपल चले धार्मिक क्रियाएं....!	22
14-	सत्संस्कार ही परम धन है- निलेशजी नान्देचा जैन	23
15-	जो भाग्यशाली वर्षीतप नहीं कर सकते वो यह तो करें....!, वर्षीतप क्या है ?	24
16-	जीव दया फण्ड (विज्ञापन)	25
17-	वर्गपहेली- 348 - जयंतीलाल जैन,रतलाम	26
18-	ज्ञान गंगोत्री- 348-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.	27
19-	शासन-समाचार	28-41
20-	हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

संपादकीय

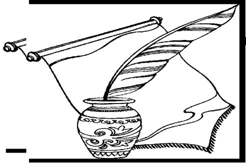

जीवन अमृत की बूंद : ऐसे सहज कर रखिऐं

मनुष्य लगातार परिवर्तनशील प्राणी है, जीवन में आनेवाले हर परिवर्तन में उसकी जीवन कहानी बदलती जाती है , नये जीवन परिवर्तन से बदलाव से जीने का अंतर आता है, जब तक जीवन में टर्निंग पाईन्ट नहीं आते है, आप खुद ही अपने आप से बोर हो जाते है तब लगता क्या निरस जीवन है ? रोज ऐसा ही जीवन जीना है क्या ? स्पष्ट है मनुष्य बदलाव चाहता है। जीवन का परिवर्तन हम जैविक और वैचारिक स्तर पर दिखाई देता है, हां इसका उम्र के साथ गहरा संबंध है लेकिन सबसे बड़ा बदलाव तो अचानक ही घटित घटनाएं जीवन में सबसे गहरे परिवर्तन लगती है । कई बार जो सोचते नहीं है वैसी घटनाएं जीवन दशा और दिशा को बदल कर रख देती है जिसका महत्वपूर्ण प्रभाव स्वयं व्यक्ति पर होने के साथ परिवार, रिश्तेदार, समाज सब पर होता है। सुख-दुःख दोनों ही परिस्थितियां जीवन को बदलकर रख देती है। कुछ भी परिस्थिति बने पर हमें यह लगता है कि आपका जीना अनिवार्य है। आपका होना आवश्यक है,यह भाव ही जीवन में विश्वास और नई आस्था को जन्म देता है। आपको अपने जीने का सबूत देना होते है।

जीवन की तीन अवस्थाएं जीवन का निर्धारण करती है, कहते है कि मनुष्य का जीवन कृष्ण की तरह नटखट होना चाहिये और जवानी राम जैसी मर्यादित, मर्यादाशील होनी चाहिये और बुढ़ापा, हाँ बुढ़ापा शंकर जैसा वैरागवान होना चाहिये । स्पष्ट संदेश है कि- बदलना चाहते है दुनिया तो अपने आप में बदलाव लाना जरुरी है । लोग कहते हैं, मैं बदल गया हूं, मेरे जीवन में बदलाव आ रहा, धर्म का प्रभाव जीवन में हो रहा है तो यह कैसे हो रहा है ? मात्र मंदिर जाने से, मात्र पूजा के वस्त्र पहन पंडित बन जाने से ही परिवर्तन आ रहा है, क्या यही धर्म है ? तो धर्म क्या है, मैं तो कहूंगा सत्य, प्रेम और करुणा का सामंजस्य यही धर्म है। जीवन को ढालने का काम माँ-महात्मा और परमात्मा करते है। इन तीनों में भक्ति का भाव समाहित है। नाम लेते ही मन में भक्ति जाग्रत हो जाती है।

जिस भूमि पर हमारा जन्म हुआउसे जीवन में जोड़कर देखेंगे तो जीवन के महत्व को समझ पायेंगे, जन्मभूमि का महत्व पहला है, देश और जन्म स्थान की भूमि का पहला महत्व है क्योंकि यहां से ही जीवन की शुरुवात होती है, दूसरा है परिवार की भूमि जिस पर चलते, हम जीवन को निखारते है, बनाते है, सजाते है और आगे बढ़ाते है और तीसरा है,जीवन आनंद लेने का सबसे महत्व साधन है यानि भक्ति की भूमि है जीवन, माँ-महात्मा और परमात्मा। अगर जीवन में भक्ति है तो उससे जीवन में, हृदय में पीर (पीड़ा), नयनों में नीर (करुणा) और मन में (धैर्य) रखने से अपूर्व शांति का अनुभव किया जा सकता है। मन, वचन और काया को अगर सद्पथ पर लगा देंगे तो जीवन में अमृत आने से कोई रोक नहीं सकता है।

जीवन की मुस्कान त्याग, उदारता और प्रेम की अनुभूति का एहसास करती है। त्याग का भाव, छोड़ने का भाव हमारा होना चाहिये। उदारता भाव अन्यों के लिये, दूसरों के लिये मन में आना चाहिये और सभी पर करुणा प्रेम रखकर आत्मा का परमात्म स्वरुप लाया जा सकता है । आदि व्याधि और उपाधि पर शब्दों से ही रोग का निर्देश करते है। आधि मन का, व्याधि तन का,और उपाधि पद का,प्रतिष्ठा का रोग है। इन तीनों रोगों से बचने का एक मात्र उपाय दया, समाधि है, निग्रंथ स्वरुप को धारण करना यही जीवन का अमृत है। **परमात्मा का बनने से पहले अपने आपका बन जाना जरुरी है। सब सुख हुआ तो जिंदगी कैसे जी जा सकती है ?**

हम अपने विरोधी से जितना चाहते है, अपने आप से कब जितेंगे, यह एक प्रश्न है ? दूसरों को जानेंगे तो अपने को समझने का मौका अपने आप मिल जायेगा। परमात्मा को अपने जीवन में जज के रुप में देखेंगे तो आपको अपनी गलती का एहसास हो जायेगा और जीवन सही मार्ग पर आकर नई ऊर्जा और शक्ति के साथ मुस्कराने लगेगा, आईये! परिवर्तन को जीवन का आधार बनाने के लिये हम आगे बढ़े! यही शुभेच्छा!

- डॉ. सुभाष जैन

समभाव सामायिक

हस्तिशीर्ष नाम का सुरम्य नगर था। उस नगर में महाप्रतापी दमयंत नाम के राजा राज्य करते थे। एक बार हस्तीनापुर नगरी के स्वामी पांडव कौरवों के साथ सीमान्त (पासवाले) राजाओं को भयंकर युद्ध हुआ। इस वक्त दमयंत राजा जरासंघ राजा की सेवा में गये हुए थे। इनकी गैर मौजूदगी में पांडव कौरवों ने दमयंत राजा का राज्य उजाड़ दिया। जब दमयंत राजा ने अपने स्वदेश के आक्रमण की बात सुनी तो कुपित हो गया। बहुत बड़ी सेना लेकर हस्तीनापुर पहुंचा दोनों के बीच खूंखार युद्ध हुआ। दैववशात् पांडव कौरव युद्ध में हार कर भाग गये। दमयंत राजा जीतकर अपने नगर लौटा।

अज्ञानता के वश जीव संसार में कई पाप कर बैठता है लेकिन ज्ञान की एक रेखा प्राप्त हो जाती है तब व्यक्ति के जीवन की राह चाह दोनों बदल जाती है। एक बार दमयंत राजा अपने राजमहल के गवाक्ष में बैठे हुए थे। अचानक राजा की दृष्टि आकाश की ओर गई। बहुत सुनहरा वातावरण देखा। एक बड़ा पंचरंगी बादल देखा। इस नयनाभिराम बादल को देखकर राजा आनंदित हो उठा और सोचने लगा क्या कुदरत की रचना है। यह दृष्य कितना सुहाना लग रहा है। कुछ ही क्षणों में जोर से वायु देवता आ गये और अपना प्रभाव उस मनोहर बादल पर डालने लगे। बस पवन के आते ही बादल बिखर गये। जैसे मयुर की आवाज से सांपों का भागना। बस कुछ ही क्षणों में जो शोभा राजा के मन को लुभाती थी वह अवर्णनीय बादल की शोभा नष्ट हो गयी।

राजा की दृष्टि तो अब भी आकाश की और रुकी हुई थी लेकिन मन के अंदर अजीबोगरीब चहल पहल मच गई। मन के परमाणु कोई चिंतन की गहराई में डूब गये। पवन का आना और बादल का नष्ट होना यह दृष्टांत जरुर मुझे कुछ समझा रहा है। क्या यह सुहाना संसार भी ऐसा ही है ? कर्म राजा रुपी वायु देवता अगर आ गये तो मेरे सुहाने संसार को उठा के ले जायेंगे। संसार की शोभा सुख है लेकिन वह सुख तो बादल की तरह असार है। तो फिर शाश्वत सुख के लिए क्या करना चाहिये ? तुरन्त तय कर लिया। यह असार संसार को ही छोड़ दूं और.... दमयंत राजा अब प्रत्येक बुद्ध की तरह पंच महाव्रतधारी मुनि बन गये। अब तो मुनिराज एक गांव से दूसरे गांव विहार करने लगे।

एक दिन हस्तिनापुर नगर के बाहर आ पहुंचे वहीं पर वे कायोत्सर्ग ध्यान में खड़े रह गये। इतने में पांडवों की राजसवारी उस रास्ते से ही निकली और पांडवों ने ध्यानी मुनिराज के दर्शन किये। लोगों के मुख से सुना कि- यह दमयंत राजर्षि है तब पांडवपुत्र सभी अपने अपने घोड़ेसे नीचे उतरकर मुनिराज को तीन प्रदक्षिणा देकर भावपूर्वक वंदना की। फिर मुनिराज का राज्य अवस्था का बल और वर्तमान का चारित्र बल का प्रभाव देखकर आनंदित होकर पांडव पुत्रों की सवारी आगे बढ़ी।

कुछ ही समय बाद कौरवों की राजसवारी निकली उनकी भी दृष्टि इन ध्यानी मुनिराज पर पड़ी। जब पता चला की यह तो वही हमें हराने वाला दमयंत है तब तो दुर्योधन, तिरस्कार पूर्वक मुनिराज के सामने वीभत्स वाणी बोलने लगा और मुनिराज की ओर बिजोरे का फल फेंका। दुर्योधन का यह दृष्य देखकर उनके सेवकों ने भी मुनिराज की और लकड़ियां पत्थर वगैरह फेंकने लगे। इस उपसर्ग से मुनिराज का सारा शरीर पत्थर लकड़ियों से ढंक गया। दुर्योधन तो खुश होकर आगे बढ़ा।

कुछ समय के बाद पांडवों की सवारी वापस लौटी। उसी जगह पर मुनिराज के दर्शन की भावना से देखा लेकिन ढंक जाने के कारण मुनिराज दिखाई नहीं दिये। तब पांडवों को वहां के लोगों से पूछने पर सच बात का पता चला। तुरन्त ही पांडवों ने सेवकों के द्वारा सब हटवा दिया। फिर समताधारी मुनिश्वर को उल्लसित भावों से वंदना कर के वे अपने स्थान पर गये।

इस प्रसंग से पांडवों की ओर मुनिराज को सम्मान प्राप्त हुआ और कौरवों की ओर से अपमान प्राप्त हुआ लेकिन मुनिराज तो समता में रहे। समभाव से यह परिषह सह लिया इसे कहते है समभाव सामायिक।

अज्ञानता के वश जीव संसार में कई पाप कर बैठता है। लेकिन ज्ञान की एक रेखा प्राप्त हो जाती है तब व्यक्ति के जीवन की राह चाह दोनों बदल जाती है।

अक्षय तृतीया पर्व की महिमा

भव्यात्माओं ! भगवान श्रीऋषभदेव का जब छह माह का योग पूर्ण हो गया तब वे यतियों-मुनियों की आहार विधि बतलाने के उद्देश्य से शरीर की स्थिति के लिये निर्दोष आहार हेतु निकल पड़े। महामेरु भगवान ऋषभदेव ईर्यापथ से गमन कर रहे हैं, अनेकों ग्राम नगर शहर आदि में पहुंच रहे हैं। उन्हें देखकर मुनियों की चर्या को न जानने वाली प्रजा बड़े उमंग के साथ सन्मुख आकर उन्हें प्रणाम करती है। उनमें से कितने ही लोग कहने लगते हैं कि हे देव ! प्रसन्न होइये और कहिये क्या काम है ? हम सब आपके किंकर हैं, कितने ही भगवान के पीछे-पीछे हो लेते हैं। अन्य कितने ही लोग बहुमूल्य रत्न लाकर भगवान् के सामने रख देते हैं और कहते हे नाथ ! प्रसन्न होइये, तुच्छ भेंट स्वीकार कीजिये, कितने ही सुन्दरी और तरुणी कन्याओं को सामने करके कहते हैं प्रभो ! आप इन्हें स्वीकार कीजिये, कितने ही लोग वस्त्र, भोजन, माला आदि अलंकार ले-लेकर उपस्थित हो जाते है, कितने ही लोग प्रार्थना करते हैं कि प्रभो ! आप आसन पर विराजिये, भोजन कीजिये इत्यादि इन सभी निमित्तों से प्रभु की चर्या में क्षण भर के लिए विघ्न पड़जाता है पुनः वे आगे बढ़जाते हैं। इस प्रकार से जगत को आश्चर्य में डालने वाली गूढ़चर्या से विहार करते हुए भगवान के छह माह व्यतीत हो जाते हैं।

राजा श्रेयांस के सात स्वप्नः-

एक दिन रात्रि के पिछले भाग में हस्तिनापुर के युवराज श्रेयांसकुमार सात स्वप्न देखते हैं। प्रसन्नचित्त होते हुए प्रातः राजासोमप्रभ के पास पहुंचकर निवेदन करते हैं कि हे भाई ! आज मैंने उत्तम-उत्तम सात स्वप्न देखे है सो आप सुनें-

प्रथम ही सुवर्णमय सुमेरुमय सुमेरु पर्वत देखा है, दूसरे स्वप्न में जिनकी शाखाओं पर आभूषण लटक रहे हैं ऐसा कल्पवृक्ष देखा है,तृतीय स्वप्न में ग्रीवा को उत्पन्न करता हुआ सिंह देखा है, चतुर्थ स्वप्न में अपने सींग से किनारे को उखाड़ता हुआ बैल देखा है, पंचम स्वप्न में सूर्य और चंद्रमा देखे है,छठे स्वप्न में लहरों से लहराता हुआ और रत्नों से शोभायमान समुद्र देखा है और

राजा सातवें स्वप्न में अष्ट मंगल द्रव्य को हाथ में लेकर खड़ी हुई ऐसी व्यंतर देवों की मूर्तियां देखी है। सो इनका फल जानने की मुझे अतिशय उत्कंठा हो राजा सोमप्रभ द्वारा स्वप्नों का फल बताना ?

भाई के स्वप्नों को सुनाते हुए राजा सोमप्रभ कुछ अकल्पित ही श्रेष्ठ फलों की कल्पना करते हुए पुरोहित की तरफ देखते हैं कि पुरोहित निवेदन करता है-

हे राजकुमार ! स्वप्न में मेरु पर्वत के देखने से यह स्पष्ट ही प्रकट हो रहा है कि जिसका मेरु पर्वत पर अभिषेक हुआ है ऐसा कोई देव आज अवश्य ही अपने घर आयेगा और ये अन्य स्वप्न भी उन्हीं के गुणों की उन्नति को सूचित कर रहे हैं। आज उन भगवान के प्रति की गई विनय के द्वारा हम लोग अतिशय पुण्य को प्राप्त करेंगे। आज हम लोग जगत में बड़ी भारी प्रशंसा, प्रसिद्धि और संपदा के लाभ को प्राप्त करेंगे इस विषय में कुछ भी संदेह नहीं है और कुमार श्रेयांस तो स्वयं ही इन स्वप्नों के रहस्य को जानने वाले हैं। इस तरह से पुरोहित के वचनों से प्रसन्न हुए दोनों भाई स्वप्न की और भगवान की कथा करते हुए बैठे ही थे कि इतने में योगिराज भगवान श्रीऋषभदेव ने हस्तिनापुर नगर में प्रवेश किया।

भगवान श्रीऋषभदेव का हस्तिनापुर में प्रवेशः-

उस समय भगवान के दर्शनों की इच्छा से चारों तरफ अतीव भीड़ इकट्ठी हो गई। कोई कहने लगे- देखो-देखो आदिकर्ता भगवान श्रीऋषभदेव हम लोगों का पालन करने के लिए यहां आए है, चलो जल्दी चलकर उनके दर्शन करें और भक्तिपूर्वक उनकी पूजा करें। कोई कह रहे थे कि संसार का कोई एक पितामह है ऐसा हम लोग मात्र कानों से सुनते थे सो आज प्रत्यक्ष में उनके दर्शन हो रहे हैं। अहो ! इन भगवान के दर्शन करने से नेत्र सफल हो जाते हैं, इनका नाम सुनने से कान सफल हो जाते हैं और इनका स्मरण करने से अज्ञानी जीवों ने भी अन्तःकरण पवित्र हो जाते हैं। कोई कहने लगे ओहो ! ये भगवान् तीन लोक के स्वामी होकर भी सब कुछ छोड़तेकर इस तरह अकेले ही क्यों विहार कर रहे हैं ?

कोई स्त्री बच्चे को दूध पिलाते हुए भी अपने से अलग कर धाय की गोद में छोड़कर भगवान के दर्शन के लिए दौड़ पड़ी, कोई स्त्री कहने लगी सखी ! भोजन करना बन्द कर, जल्दी उठ और यह अर्घ्य हाथ में ले, अपन चलकर जगत गुरु भगवान की पूजा करेंगे। इत्यादि कोलाहल के बीच से निकलते हुए भगवान मनुष्यों से भरे हुए नगर को सूने वन के समान जानते हुए निराकुल छोड़कर वाँद्री चर्या का आश्रय लेकर विहार कर रहे हैं। इसी बीच सिद्धार्थ का नाम का द्वारपाल आकर गदगद् वाणी से बोलता हैं- राजा सोमप्रभ और राजा

श्रेयांस द्वारा भगवान का नवधा भक्ति पूर्वक आहार कराना।

महाराजा तीन जगत के गुरु भगवान श्रीऋषभदेव स्वयं ही अकेले इधर आ रहे है। इतना सुनते ही राजा सोमप्रभ और राजकुमार श्रेयांस दोनों ही भाई अन्तःपुर सेनापति और मंत्रियों के साथ तत्क्षण ही उठ पड़े और राजमहल के आंगन तक बाहर आ गए। दोनों भाईयों ने दूर से ही भगवान को नमस्कार किया। उनके चरणों में अर्घ्य सहित जल समर्पित किया। भगवान के मुखकमल को देखते ही कुमार श्रेयांस को अपने कई भवों का जातिस्मरण हो आया, उनको रोमांच हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो मेरे घर में तीन लोक की सम्पदा ही आ गई है- उन्हें आहार देने की सारी विधि याद आ गई। शीघ्र ही पड़गाहन विधि को करते हुए भगवान की तीन प्रदक्षिणायें दी। अन्दर ले गये, उन्हें उच्च आसन पर बैठने के लिए निवेदन किया- भगवान उच्च आसन पर विराजमान होइये। पुनः प्रभु के चरणों का प्रक्षालन करके मस्तक पर गंधोदक चढ़ाकर अपना जीवन धान्य माना और अष्ट द्रव्य से पूजा की। पुनः पुनः प्रणाम करके मन, वचन, काय की शुद्धि का निवेदन किया, पुनः आहार जल की शुद्धि का निवेदन करके भक्ति से हाथ जोड़कर बोल- सर्वप्रथम इक्षुरस का आहार। नाथा यह प्रासुक इक्षुरस है इसे ग्रहण कर मुझे कृतार्थ कीजिए। भगवान ने उस समय खड़े होकर अपने दोनों हाथों की अंजुली बनाई और उसमें आहार लेना शुरु किया।

राजकुमार श्रेयांस भगवान के हाथ की अंजुली में इक्षुरस दे रहे हैं। राजासोमप्रभ और रानी लक्ष्मीमती भी प्रभु के करपात्र में इक्षुरस देते हुए अपने आपको धान्य समझ रहे हैं। इसी बीच गगनांगण में देवों का समूह एकत्रित हो गया और रत्नों की वर्षा करने लगा, मंदार पुष्पों को बरसाने लगा, मंद सुगंध पवन चलने लगी, दुंदभि बाजे-बजने लगे और अहोदान, महादान आदि ध्वनि से आकाशमंडल शब्दायमान हो गया।

आहार दान देकर अपने आपको कृतकृत्य मानना।

इस समय दोनों भाईयों ने अपने आपको बहुत ही कृतकृत्य माना क्योंकि कृतकृत्य हुए भगवान श्रीऋषभदेव स्वयं ही उनके घर को पवित्र करने वाले हैं। उस समय दान की अनुमोदना करने वाले बहुत से लोगों ने भी परम पुण्य को प्राप्त किया था। भगवान श्रीऋषभदेव आहार ग्रहण कर वन की ओर प्रस्थान कर गये। राजा सोमप्रभ और श्रेयांस भी कुछ दूर तक भगवान के पीछे-पीछे गये पुनः भगवान को हृदय में धारण किये हुए ही वापस लौटते समय उन्हीं के गुणों की चर्चा करते हुए और प्रभु के पद से चिन्हित पृथ्वी को भी नमस्कार करते हुए आ गये। उस समय पूरे हस्तिनापुर में एक ही चर्चा थी कि राजकुमार श्रेयांस को प्रभु को आहार देने की विधि कैसे मालूम हुई। यह आश्चर्यमयी दृश्य देवों के हृदय को भी आश्चर्यचकित कर रहा था। देवों ने भी मिलकर राजा श्रेयांस की बड़े आदर से पूजा की।

भरत महाराज भी वहां आ गये और आदर सहित राजकुमार से बोले- हे महादान पते ! कहो तो सही तुमने भगवान के अभिप्राय को कैसे जाना ? हे कुरुराज ! आज तुम हमारे लिए भगवान के सामने ही पूज्य हुए हो, तुम दानतीर्थ की प्रवृत्ति करनेवाले हो और महापुण्यवान हो, इसलिए मैं तुमसे यह सब पूछ रहा हूं कि जो सत्य हो वह अब मुझसे कहो। इस प्रकार सम्राट के पूछने पर श्रेयांस कुमार बोलते हैं- राजन् ! जिस प्रकार प्यासा मनुष्य सुगंधित स्वच्छ शीतल जल के सरोवर को देखकर प्रसन्न हो उठता है वैसे ही भगवान् के अतिशय रुप को देखकर मेरी प्रसन्नता का पार नहीं रहा कि मुझे उसी निमित्त से जाति स्मरण हो आया जिससे मैंने भगवान का अभिप्राय जान लिया।

राजा श्रेयांस द्वारा अपना पूर्व भव बताना।

वह क्या ? मुझे भी सुनाओ। महाराज ! आज से आठवें भव पूर्व विदेह क्षेत्र की पुंडरीकिणी नगरी के राजा वज्रसंघ और रानी श्रीमती ने बड़े ही प्रेम से वन में चारणऋद्धिधारी युगल मुनियों को आहारदान दिया था। उस समय राजा के मंत्री, सेनापति, पुरोहित और सेठ भी आहारदान की अनुमोदना कर रहे थे और पास में कुछ ही दूर से देखते हुए नेवला, वानर, व्याघ्र और सूकर ये चार पशु भी आहार देखकर प्रसन्नमन होते हुए उसकी अनुमोदना कर रहे थे। आहार होने के अनंतर कंचुकी ने कहा- राजन् ! ये दोनों ही मुनि आपके ही युगलिया पुत्र हैं। महाराज वज्रजंघ को अतीव हर्ष हुआ। वे उनके चरणों के निकट बैठकर अपनी रानी श्रीमती के, अपने मंत्री आदि चारों के तथा नेवला आदि चारों के भी पूर्व भव पूछने लगे। मुनिराज ने भी अपने दिव्य अवधिज्ञान के द्वारा क्रम-क्रम से सभी के पूर्व भव सुना दिये, अनंतर बतलाया कि- आप इस भव से आठवें भव में जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र की अयोध्यानगरी में राजा नाभिराय की महारानी मरुदेवी की कुक्षी से प्रथम तीर्थकर श्रीऋषभदेव के रुप में अवतार लेंगे। आपकी रानी श्रीमती का जीव हस्तिनापुर के राजा सोमप्रभ का भाई श्रेयांस कुमार होगा। आपके ये मंत्री आदि आठों जीव भी अब से लेकर आठ भव तक आपके साथ संबंध स्थापित करते हुए आपके तीर्थंकर के भव में

आपके पुत्र होवेंगे और उसी भव से मोक्ष की प्राप्ति करेंगे।

हे चक्रवर्तिन्! आप उस समय राजा वज्रजंघ के मतिवर नाम के महामंत्री थे, सो इस भव में भगवान के ही पुत्र होकर चक्रवर्ती हुए हो। उस समय के राजा वज्रजंघ के जो आनंद नाम के पुरोहित थे, उन्हीं का ही जीव आज आपके भाई बाहुबली हुए हैं जो कामदेव हैं। अंकपन सेनापति का जीव ही आपका भाई ऋषभसेन हुआ है जो कि आज पुरिमतालपुर नगर का अधीश्वर है, धनमित्र सेठ का जीव आपका अनंत विजय नाम का भाई है। दान की अनुमोदना से ही उन्नति करने वाले व्याघ्र का जीव आपका अनंतवीर्य नाम का भाई है, शकूर का जीव अच्युत नाम का भाई है, वानर का जीव वीर नाम का भाई है और नेवला का जीव वरवीर नाम का भाई है अर्थात् राजा वज्रजंघ के आहारदान के समय जो मतिवर मंत्री आदि चार लोग दान की अनुमोदना कर रहे थे और व्याघ्र आदि चारों जीव अनुमोदना कर रहे थे वे दान की अनुमोदना के पुण्य से क्रम-क्रम से मनुष्य के और देवों के सुखों का अनुभव करके अब इस भव में तीर्थंकर के पुत्र होकर महापुरुष के रुप में अवतीर्ण हुए हैं और सब इसी भव से प्रभु के तीर्थ से ही मोक्षधाम को प्राप्त करेंगे। मैं भी भगवान का गणधर होकर अंत में मोक्षधाम को प्राप्त करुंगा।

दान की महिमाः-

सम्राट भरत! यह दान की महिमा अचिन्त्य है, अद्‌भूत है और अवर्णनीय है। देव भी इसकी महिमा को नहीं कह सकते है पुनः साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या है ? राजन्! जो दाता, दान, देय और पात्र इनके लक्षणों को समझकर सत्पात्र में दान देता है। वह निश्चित ही मोक्ष का अधिकारी हो जाता है। देखो! इस आहारदान के बिना मोक्ष मार्ग चली नहीं सकता है, अतः आहार, औषधि, शास्त्र और अभय इन चारों दानों में भी आहारदान ही सर्वश्रेष्ठ है और वही शेष दानों की भी पूर्ति कर सकता है। इस प्रकार से विस्तृत भवावली और अपना या भगवान ऋषभदेव का व राजकुमार श्रेयांस के कई भवों तक पारस्परिक संबंध सुनकर भरत चक्रवर्ती अत्यधिक प्रसन्न हुए और बोले-

कुरुवंश शिरोमणे! भगवान ऋषभदेव जैसा ना तो कोई उत्तम सत्पात्र होगा और न आप जैसा महान दातार होगा, न आप जैसी नवधा भक्ति की विधि ही होगी, न आपके जैसा उत्तम फल को प्राप्त करने का अधिकारी ही हर कोई बन सकेगा। आप इस युग में दानतीर्थ के प्रथम प्रर्वतक कहलाओगे। युग-युग तक आपकी अमर कीर्ति यह भारत वसुन्धरा गाती ही रहेगी। इत्यादि प्रकार से राजकुमार श्रेयांस का सत्कार करके राजा भरत अयोध्या नगरी की तरफ प्रस्थान कर गये।

अक्षय तृतीया नाम क्यों पड़ा....

जिस दिन भगवान का आहार हुआ था उस दिन वैशाख सुदी तृतीया थी। अतः उस दान के प्रभाव से ही वह अक्षय तृतीया इस नाम से आज तक इस भारत भूमि में प्रचलित है क्योंकि जहां पर भगवान का आहार होता है वहां पर उस दिन भोजनशाला में सभी वस्तु अक्षय हो जाती है अतः इसका यह नाम सार्थक हो गया है तथा वह दिन इतना पवित्र हो गया कि आज तक भी बिना मुर्हूत देखे शीघ्र शोधे भी बड़े मांगलिक कार्य इस अक्षय तृतीया के दिन प्रारम्भ कर दिये जाते हैं। सभी सम्प्रदाय के लोग भी इस दिन को सर्वोत्तम मुर्हूत मानते हैं। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है। यह है आहार दान का माहात्म्य जो कि सभी की श्रद्धा करने योग्य है।

हे चिर सनातन, हे पुरुष प्रधान, हे पुरातन, विश्व क्षितीज गौरव, अमल श्रद्धा भावना से, कर रहे अभिवंदन, माता मरुदेवा की कुक्षि से मिला जगत को नव स्पंदन।

अंबर की आभा न्यारी, वसुधा की विभुता अपार,
प्रथम प्रणेता, ऋषभ नाथ का मान रहा आभार।
जिंदगी का राज देकर, करा सृष्टी कल्याण,
बाँध सुंदर नीतियों सब, मनुज जीवन को दिया वरदान।
संयम पथ पर राही बनकर, धर्म में लाये नव निखार
नवसूत्र में इतिहास बना, साधना से फैला नव्य निखार।
वर्षीतप में घूम रहे थे, माता मरुदेवा के लाल,
जनता हरपल लाकर देती, नीतनये उपहारों की थाल।
हाथी घोड़े लाते रहे सब, जो प्रभु को न थे स्वीकार,
राजमार्ग पर चलते रहे, कर अनशन स्वीकार।
स्वप्न श्रेयांश का हुआ साकार, ईक्षु कलशं बहराने का,
अहोदानम् अहोदानम् की गुजिंत हुयी झंकार।
वर्षीतप का हुआ समापन, और फिर से प्रारंभ,
तेज साधना से तेजोमय, धर्म में कीर्ती स्तंभ।
पात्रदान की महिमा विश्रुत, सब शास्त्रों ने हे गायी,
प्रभु के पारणे से जग में खुशियां छाई, आखातीज ये पर्व मनाये॥

जय श्रीआदिनाथ भगवान

पांच प्रकार के आचार ? :-

1- ज्ञानाचार, 2- दर्शनाचार, 3- चारित्राचार, 4-तपाचार, 5- वीर्याचार।

गुस्सा उतारने से पहले जरा सोचें तो ??

*स्नेहदीप

मार्क ट्वेइन ने ''हक्कलबेरी फीन'' नामक अपनी पुस्तक में एक करुण प्रसंग लिखा है। ''जिम'' नामक एक हब्शी.... अपनी नन्हीं सी चार साल की बेटी ''एलिजाबेथ'' के साथ रहता था। गरीबी थी ! मेहनत मजदूरी और दिनभर सख्त काम करके वो अपना गुजारा चलाता था।

अपनी एकलौती बेटी पर उसे बड़ा प्यार था। हर पल हर क्षण वो अपनी गुड़िया सी लाड़ली को खुश रखने की कोशिश करता था।

मौसम के बदलाव का शिकार होकर एक बार एलिजाबेथ बीमार पड़ी। बुखार.... सर्दी-जुकाम से वो परेशान हो उठी। फिर तो बहुत ही बुखार.... और बीमारी लम्बी चली। दवाई कोई कारगर सिद्ध न हुई। आखिर कई दिनों बाद बच्ची ठीक हुई ! धीरे-धीरे.... वो अपनी जानी पहचानी मुस्कान बिखेरती हुई घूमने लगी.... पर वो खामोश खामोश रहती थी ! बाप ने सोचा.... शायद बीमारी के कारण वो थकान कमजोरी.... ज्यादा महसूस कर रही होगी।

एक दिन कमरे में हवा ज्यादा आ रही थी। एलिजाबेथ दरवाजे के समीप खड़ी थी। जिम ने कहा- बेटी, दरवाजा बंद कर दे.... एलिजाबेथ कुछ बोली नहीं.... दरवाजा बंद भी नहीं किया। बस.... खड़ी-खड़ी हंसती रही। जिम को जरा गुस्सा चढ़ा। यह क्या बदतमीजी है ? दुबारा उसने कहा- ''दरवाजा बंद कर !'' पर बेटी तो खड़ी रही.... पुतले की तरह ! जिम का गुस्सा बढ़ने लगा !

सुनती नहीं क्या ? मैं कहता हूं.... दरवाजा बंद कर ! बहरी है क्या ? पर एजिलाबेथ तो मुस्कान होठों पर दबाये खड़ी रही.... न दरवाजा बंद किया.... न कुछ जवाब दिया ! जिम अपने आप पर काबू न रख पाया.... उसने ''सटाक'' एक चांटा रसीद कर दिया बेटी के गाल पर...! बच्ची जमीन पर गिर पड़ी.... वो रोने लगी। जिम क्रुद्ध होकर पास के कमरे में चला गया। कुछ देर पश्चात वापस लौटा तो देखा कि दरवाजा अभी भी खुला है.... बच्ची खड़ी-खड़ी रो रही है....जिम का गुस्सा अभी कम नहीं हुआ था.... अभी भी इसे दरवाजा बंद करने का सुझ नहीं रहा है...? वो उसे एक थप्पड़ और मारने जा रहा था कि हवा का जोरदार झोंका आया.... और धड़ाम से दरवाजा बंद हो गया ! लड़की हिली तक नहीं अपनी जगह से !

जिम को जरा अटपटा सा लगा.... वो अवाक् रह गया। उसने लड़की के पीछे जाकर एकदम से ''हाऊक्'' किया.... पर लड़की डरी नहीं कि वहां से खिसकी नहीं !

जिम अब रो पड़ा.... उसे ख्याल आ गया कि लम्बी बीमारी.... बुखार ने उसकी लाड़ली बेटी को गूंगी-बहरी बना दिया था !

फिर तो जिम ने उसे अपनी गोद में लेकर ढेर सारा प्यार दिया.... स्वयं रोते रोते बच्ची के आंसू पौछे.... बिना जाने-समझे किये हुए गुस्से पर उसे अफसोस हो रहा था...!!

गुस्सा करने से पहले.... डांटने-झपटने के पूर्व यदि थोड़ा सा सोच ले.... हालात का अंदाजा ले ले तो क्या बेहतर नहीं होगा ?

आठ प्रभावक ?

1- प्रवचन प्रभावक- श्रीवज्रस्वामीजी।
2- धर्मकथा प्रभावक- श्रीसर्वज्ञसूरीश्वरजी।
3- वादी प्रभावक- श्रीमल्लवादीसूरिजी।
4- निमित्तवेत्ता-श्रीभद्रबाहुस्वामीजी।
5- तप प्रभावक- श्रीकाष्ठमुनिजी।
6- विद्या प्रभावक-श्रीहेमचंद्राचार्यजी महाराज।
7- सिद्धि प्रभावक- श्रीपादलिप्तसूरीजी।
8- कवि प्रभावक- श्रीहरिभद्रसूरीजी।

जब गुरु वंदन नहीं करने की पांच स्थितियाँ ? :-

1-जब गुरु महाराज का ''चित्त व्याकुल'' हो।
2- जब गुरु महाराज का ''प्रमाद'' में हो।
3- जब गुरु महाराज गुरु ''मुंह फेरकर'' बैठे हो।
4- जब गुरु महाराज ''आहार'' कर रहे हो।
5- जब गुरु महाराज का ''आहार-निहार'' की तैयारी में हो।

इस देह द्वारा करने योग्य कार्य तो एक ही है कि किसी के प्रति राग या किसी के प्रति किंचित् भी द्वेष न रहे- सर्वत्र समदशा रहे यही कल्याण का मुख्य निश्चय है।

वर्षीतप की महिमा.... जिन शासन की गरिमा

✻ आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी महाराजा

आदिमं पृथिवीनाथ,आदिमं निष्परिग्रहम्।
आदिम तीर्थ नाथं च, ऋषभ स्वामिनं स्तुमः ।।
इस युग के जो आदि नृपति थे,और प्रथम मुनिव्रतधारी।
प्रथम तीर्थकर्ता थे वे ही,ऋषभस्वामी जग जयकारी ।।

जैन काल गणना सिद्धांत के अनुसार एक कालचक्र में 12 आरे होते हैं। उसके छः आरे अवसर्पिणी काल कहलाते हैं और छः आरे उत्सर्पिणी काल। इस अवसर्पिणी काले के प्रथम, द्वितीय और तृतीय आरे के अंतिम समय तक मनुष्य प्रकृति आश्रित था । ''कल्पवृक्ष'' से उसकी सारी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाती थी। धीरे-धीरे परिवर्तन होने लगा। मनुष्य कुलों (समूहों, कबीलों) में बंटने लगे। कुलों के मुखिया को ''कुलाकर'' कहते थे। कुलकर व्यवस्था के चलते सातवें कुलकर हुए ''नाभिराजा''। उनकी पत्नि का नाम था- ''मरुदेवा'' । नाभिराजा के काल तक ''युगलिया'' काल कहलाता था जिसका अर्थ है- एक माता-पिता से केवल दो संतानें एक साथ जन्म लेती थी और वे ही आगे चलकर पति-पत्नी का युगल (जोड़ा) बन जाते थे।

अवसर्पिणी काल का तीसरा आरा जब समाप्त होने पर था तब पुण्यशाली आत्मा ऋषभकुमार ने चैत्र अष्टमी की अर्धरात्री के समय जन्म लिया। प्राचीन जैन ग्रंथों में बताया गया है कि ऋषभदेव की आत्मा ने अनेक जन्मों में दीर्घकालीन तपस्याएं की थी। सेवा, दान, ध्यान, तप और शुभ भावों की उच्चता के कारण महान पुण्यों का उपार्जन किया था। ''धन्ना सार्थवाह'' बनकर उसने तपस्वी मुनियों आदि को दान दिया। ''जीवानन्द वैद्य'' के मानव भव में उसने निःस्वार्थ भाव से रुग्ण मुनियों व जनता की खूब सेवा की थी और ''वज्रनाभ''नामक राजा के जन्म में उसने दीन-दुखियों का पालन-पोषण किया था। उसने लोक सेवा के अनेक कार्य किये और अन्त में राज्य त्यागकर तथा मुनिव्रत धारणकर अपूर्व ज्ञान-उपासना, तप,ध्यान, तितिक्षा आदि दीर्घकालीन साधनाएं करके तीर्थकर नाम का उपार्जन किया। पूर्वभव के इन महान पुण्यों के कारण ऋषभकुमार के रुप में उनका जन्म हुआ । ऋषभकुमार अत्यन्त प्रतिभाशाली, दूरदर्शी और पुरुषार्थवादी थे। वे मानव मनोविज्ञान के गहरे विद्वान भी थे। उन्होंने कृषि (खेतीवाड़ी) मषि (व्यापार) और असिकर्म (शस्त्र-संचालन) की भी शिक्षाएं दी। इसी प्रकार बर्तन बनाना, वस्त्र बनाना, भवन बनाना, शिल्प-कला, संगीत, नृत्य आदि अनेक विद्याएं सिखाकर उन्होंने समाज में ज्ञान, कला, मनोरंजन, व्यापार व राज्य व्यवस्था के मूलभूत सिद्धांतों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। पौराणिक ग्रंथों और गीतार्थ ज्ञानिओं द्वारा लिखित शास्त्रों के अनुसार ऋषभकुमार ने सुनन्दा नाम की एक अन्य युगलिया कन्या के साथ लग्न करके ''विवाह''प्रथा का प्रारंभ किया। फिर नाभराया ने सुमंगला के साथ उनका पाणिग्रहण संस्कार करवाया था । यथासमय सुमंगला के ''भरत'' व ''ब्राम्ही'' आदि 98 संतानें हुई तथा सुनन्दा ने ''बाहुबली'' और ''सुन्दरी'' को जन्म दिया। जनता की उचित मांग पर महाराज नाभिराय ने एक विशाल जन समारोह आयोजित कर ऋषभकुमार का राज्याभिषेक किया। इन्द्र के आदेश से कुबेर ने विनीता नगरी का निर्माण किया जो आगे चलकर ''अयोध्या'' नाम से प्रसिद्ध हुई। काल के प्रभाव में ऋषभ कुमार का आत्मीय चिंतन अत्यन्त दृढ़ हो गया कि- ''वस्तु के भोग में सुख नहीं बल्कि सुखतो भोग-इच्छा की निवृत्ति में ही है।'' महाराजा ऋषभ ने बड़े पुत्र भरत को ''अयोध्या''का, बाहुबली को ''तक्षशिला'' का तथा अन्य पुत्रों को छोटे बड़े राज्य सौंप कर स्वयं ने दीक्षा ग्रहण कर ली । भगवान श्रीऋषभदेव उस युग के प्रथम मुनि या भिक्षु थे। शुद्ध भिक्षा (गोचरी) के अभाव में वे एक वर्ष 40 दिन तक निर्जल-निराहार तप करते करते हस्तिनापुर नगरी पधारे। हस्तिनापुर में उस समय बाहुबली के पुत्र सोमप्रभ राजा राज्य करते थे। उनका पुत्र था- श्रेयांसकुमार। उस रात श्रेयांसकुमार ने एक विचित्र स्वप्न देखा- ''स्वर्ण के समान चमकने वाला मेरुपर्वत काला पड़ गया है और मैं दूध के कलश से उसका अभिषेक कर उसे पुनः उज्ज्वल बना रहा हूं।''

श्रीऋषभदेव प्रभु को राजमहल की ओर पधारता देखकर उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ। उसने तत्काल समझ लिया कि ''भगवान'' श्रीऋषभदेव एक वर्ष से निराहार विचरण कर रहे हैं और मुनि-मर्यादा के अनुकूल शुद्ध भिक्षा देने का किसी को ज्ञान नहीं है। श्रीऋषभदेव के प्रपौत्र, बाहुबलि के पौत्र,

सोमप्रभ राजा के पुत्र, ऐसे श्रेयांसकुमार जैसे ज्ञानी-ध्यानी राजकुमार ने प्रभु को भक्तिपूर्वक वन्दना की तथा शुद्ध व ताजे इक्षुरस भरे एक सौ आठ कलशों द्वारा श्रीआदिनाथ प्रभु को पारणा करने की सविनय प्रार्थना की। उग्र तपस्वी प्रभु श्रीऋषभदेव ने दोनों हाथों को अंजलिपुट बनाकर इक्षुरस ग्रहण किया। इस तरह इस जगत में धर्म-दान की प्रवृत्ति का शुभारंभ हुआ। इस पुनीत स्मृति में महिमा और गरिमा से ओतप्रोत यह वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन ''अक्षय तृतीया'' के नाम से पर्व और महोत्सव के रुप में संपूर्ण विश्व में मनाया जाने लगा।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हजारों लोग इस देश के विभिन्न नगरों, शहरों व गांवों में वर्षीतप की आराधना कर रहे हैं जो धन्य है। उन सभी को हम अपने अन्तरमन से भावपूर्वक सुख शाता पूछते है। हस्तिनापुर व पालीताना जैसे पावन तीर्थों के अतिरिक्त कई स्थलों पर शुभ दिन सामुदायिक वर्षीतप पारणों के आयोजन किये गये जाते है जो अनुमोदनीय और अनुकरणीय सुकृत्य है। आप सभी पाठकों से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि श्रेयांसकुमार के उच्चतम व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरित होकर आप भी अपने स्वजनों, परिजनों व परिचितों को उस दिन इक्षुरस से पारणा कराकर पुण्यार्जन अवश्य करें। उनके उग्र तप की अंतरमन से अनुमोदना करें।

कर्म बंधन संबंधित प्रेरक-उपदेशक संदेशः-

प्रभु श्रीआदिनाथ स्वयं ने अपने पिछले जन्म में एक बैल का मुंह बांधने की सलाह दी थी क्योंकि वह खेत की फसल को खा रहा था। खेत के मालिक द्वारा बैल को निर्दयतापूर्वक मारता देख, प्रभु ने करुणावश की यह सलाह दे दी थी ताकि बैल को मार भी नहीं पड़ेगी और किसान को फसल का नुकसान भी नहीं होगा। भूख-प्यास से बिलखता वह बैल 360 पलोपल तक तड़पता रहा, उसे अपार वेदना हुई। प्रभु के सुझाव में करुणा-भाव होते हुए भी अंतराय कर्म का बंध हुआ। इसी कर्म के निवार्णार्थ प्रभुजी को 400 दिन तक भिक्षा में शुद्ध आहार नहीं मिला, यानि उन्हें उपवास में रहना पड़ा। यही से तप के द्वारा अंतराय कर्म-बंधन की मुक्ति का विधान शुरु हुआ। जैन सिद्धांतों के अनुसार कर्म ने किसी राजा-महाराजा, चक्रवर्ती तो क्या तीर्थकरों को भी नहीं छोड़ा। हर व्यक्ति को अपने कर्मो के अच्छे-बूरे परिणामों को भोगना अथवा भुगतना पड़ता है। अधिक जानकारी की जिज्ञासा हो तो गीतार्थ ज्ञानियों से तर्कबद्ध विचार-विमर्श अवश्य करें।

आप क्या कर सकते हैं....

अब जब आप इसे पूरा पढ़ चुके होंगे। आप निश्चित ही इस समस्या को लेकर काफी जागरुक हो गये होंगे और आपकी विचारशक्ति इस समस्या को हल करने में आपका योगदान खोज रही होगी। इस समस्या से निपटने के लिये प्रत्येक व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है। इसके लिये किसी संगठन से जुड़ने की जरुरत नहीं है, किसी वैचारिक क्रांति की भी आवश्यकता नहीं है। आप अपनी जीवनशैली में कुछ चीजों को शामिल करके इस समस्या को हल करने में बड़ी भूमिका निभा सकते है। जीवनशैली के थोड़ेसे हेर-फेर से ही इस समस्या को कम किया जा सकता हैः-

❊ फ्रिज और एसी का इस्तेमाल कम से कम कीजिए।

❊ अपने वाहन की समय पर सर्विस कराइए ताकि पर्यावरण प्रदूषित करने में आपका योगदान कम से कम हो।

❊ आने-जाने में जहां तक संभव हो, सार्वजनिक साधनों का प्रयोग कीजिए।

❊ प्लास्टिक का कम से कम उपयोग कीजिए। हो सके तो इसके उपयोग पर पूरी तरह अंकुश ही लगा दीजिए।

❊ एक पेड़ अवश्य लगाइए और हो सके तो अपने आस-पास के लोगों को इस बात के लिए प्रेरित कीजिए।

पृथ्वी से मानव का अस्तित्व जुड़ा हुआ है और इसकी देखभाल न करके हम सबसे ज्यादा अपना ही नुकसान कर रहे है। इस बात को हमसे ज्यादा हमारे पूर्वज समझते थे। रामायण में कहा गया है- जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादिपी गरीयसी।

अर्थात् माता और जन्मभूमि दोनों स्वर्ग के राज्य से भी ज्यादा महान होती है। अपनी धरती के लिए इस तरह का भाव रखने वाले हम भारतीयों का तो यह विशेष कर्त्तव्य है कि हम कम से कम उन बातों का ख्याल रख सकते है जो हमारे हाथों में है।

उत्सर्पिणी काल संबंधी छः आरों का स्वरुप

अवसर्पिणी काल संबंधी 21 हजार वर्षप्रमाण वाले अत्यन्त दुःखमय दुःषम-दुःषमा नामक छट्ठे आरे के पूर्ण होने पर श्रावण बदि प्रतिपदा-एकम के दिन बालव नामक करण और अभिजित् नक्षत्र के साथ चंद्रमा का योग प्राप्त होने पर उत्सर्पिणी काल संबंधी पहला दुःषम-दुःषमा नामक प्रथम आरा प्रारंभ होगा। इस आरे का कुल कालमान होगा 21 हजार वर्ष। इस आरे में जीवों की स्थिति हाहाकार और चीत्कारपूर्ण ही रहेगी; दुःखमयी ही रहेगी; मगर उत्सर्पिणी काल के प्रभाव से जीवसृष्टि एवं प्रकृति के आयुष्य, बल, वीर्य, पुरुषकार, संहनन, संस्थान, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी। कुल मिलाकर अवसर्पिणी काल के छट्ठे आरे के अंत समय में जीवों और प्रकृति की जैसी स्थिति थी वैसी स्थिति उत्सर्पिणी काल के छट्ठे आरे के प्रारंभिक काल में होगी और अवसर्पिणी काल के छट्ठे आरे के प्रारंभ में जैसी स्थिति थी वैसी स्थिति उत्सर्पिणी काल के छट्ठे आरे के प्रारंभिक काल में होगी और अवसर्पिणी काल के छट्ठे आरे के प्रारंभ में जैसी स्थिति थी वैसी स्थिति उत्सर्पिणी काल के प्रथम आरे के अंतिम समय में होगी; यानि आयुष्य, बल, वीर्यादि में उत्तरोत्तर अनंतगुणी वृद्धि होती रहेगी।

प्रथम आरे के 21 हजार वर्ष बीतने के बाद उत्सर्पिणी काल संबंधी दूसरा दुःषमा नामक आरा प्रारंभ होगा। इस आरे के प्रथम समय में इस सकल भरत क्षेत्र जितने लंबे और चौड़े क्षेत्र-गगन में पुष्करसंवर्तक नामक महामेघ छा जाएगा, बादल गजरेंगे, बिजलियां चमकेगी। वे बादल लगातार सात दिनों तक मुसलाधार मुट्ठी जितनी मोटी-मोटी धाराओं के रुप में बरसेंगे जिसके कारण अंगारों के समान तपी हुई यह धरती शीतल हो जाएगी। सात दिनों के बाद क्षीरमेघ नामक बादल उत्पन्न होंगे। पुष्करसंवर्तक मेघ के समान ये भी बादल पूरे भरत क्षेत्र की धरती जितने लंबे चौड़े आकाश प्रदेश में छाए रहेंगे। बादल गरजेंगे, बरसेंगे भी; बिजलियां भी चमकेंगी। इन बादलों की जलधाराओं से इस भरत क्षेत्र की भूमि में शुभ्र वर्ण, गंध, रस और शुभ्र स्पर्श पैदा होगा। इसी प्रकार सात दिनों तक क्षीरमेघ नामक बादल बरसेंगे जिसके कारण इस भरत क्षेत्र की भूमि में स्निग्धता उत्पन्न होगी। घृतमेघ नामक बादलों के बरसने के बाद अमृतमेघ नामक बादल आकाश में छाए-छाए रहेंगे, पूरे भरत क्षेत्र में गरजेंगे, अविच्छिन्न रुप से सात दिनों तक बरसेंगे और उन जलधाराओं के प्रभाव से इस भरत क्षेत्र की भूमि पर जगह-जगह वृक्ष, गुच्छ, गुल्म, लताएं, बेल, घास, गन्ने, दूब, औषधियां, कोमल पत्ते तथा अंकुरादि उत्पन्न होंगे। अमृत मेघों के सात दिनों तक लगातार बरसने के पश्चात् रसमेघ नामक बादल आकाश में छाए रहेंगे और सात दिनों तक अविच्छिन्न बरसेंगे। इस महामेघ की जलधाराओं के प्रभाव से भिन्न-भिन्न वृक्ष, गुच्छ, गुल्म, लतादि वनस्पतिकाय में तिक्त-तीखा, कटु-कड़वा, कषाय-कसैला, आम्ल-खट्टा और मधुर-मीठे रस का संचार होगा। भरत क्षेत्र में वृक्ष, गुच्छ, गुल्म, लताएं, बेल, घास, गन्ने, दूब, औषधियां, कोमल पत्ते तथा अंकुरादि उत्पन्न होंगे; उनमें क्रमशः छाल, त्वचा, पत्र, कोंपल, अंकुर, पुष्प, फलादि के रुप में विकसित होंगे, परिपुष्ट होंगे और सुखपूर्वक सेवन-खाने पीने योग्य होंगे।

49 दिनों के बाद इस भरत क्षेत्र में बिलों में रहने वाले मनुष्य बाहर निकलेंगे; एक दूसरे को खुशी से पुकार-पुकार कर बिलों से बाहर निकलने के लिये आग्रह करेंगे; सभी जन बिलों से बहार आएंगे; उगे हुए वृक्ष, गुच्छ, लता, बेल आदि को देखेंगे; उन वृक्षादि पर उगे हुए छाल, पत्र, प्रवाल, पल्लव, अंकुर, पुष्प एवं फलादि को देखकर हर्षित होंगे और मिल-जुलकर यूं व्यवस्था करेंगे-

हे देवानुप्रियो ! इस भरत क्षेत्र में अब वृक्ष, गुच्छ, लता, बेलादि, परिपुष्ट हो गए हैं; इनका भोग, उपभोग किया जा सकता है अतः आज से हम इस अपवित्र मांसादि कुत्सित आहार का सर्वथा त्याग करते हैं, यदि कोई इस व्यवस्था का अतिक्रमण करेगा तो उसकी छाया भी वर्जनीय होगी। वे इस व्यवस्था से जीना आरंभ करेंगे; सुखमय स्थिति, परिस्थिति का उत्तरोत्तर निर्माण होता रहेगा; आयुष्य, बल, वीर्य, पुरुषाकार संस्थान, संहनन में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी।

उस समय यानि दूसरे आरे के प्रारंभ से लेकर अंत तक इस भरत क्षेत्र का पूरा भूभाग उत्तरोत्तर समतल एवं रमणीय बन जाएगा। उस समय दूसरे आरे के अंतिम समय तक तो मनुष्यों में से कुछ मनुष्यों में छः संस्थानों में किसी में कोई संस्थान तो किसी में कोई संस्थान इसी प्रकार छः संहननों में

से किसी में कोई संहनन तो किसी में कोई संहनन पाया जाएगा। मनुष्य की अवगाहना भी भिन्न-भिन्न पाई जाएगी; कुछ मनुष्यों की उत्कृष्ट अवगाहना-सात हाथ तक की भी पाई जाएगी। इस समय मनुष्यों की उत्कृष्ट आयुष्य सौ वर्षों से कुछ अधिक होगी। इस कालविभाग में जन्म धारण करने वाले जीव चारों गतियों में जाएंगे; यानि कई नरकगति में तो कई तिर्यचगति में तो कई मनुष्य तथा देवगति में; मगर कोई मनुष्य मरकर मोक्ष में नहीं जा पाएगा। इस तरह 21 हजार वर्ष पूर्ण हो जाने बाद तीसरा दुःषम-सुषमा नामक आरा प्रारंभ होगा यानि उस कालविभाग में दुःख अधिक और सुख अल्प पाया जाएगा।

तीसरे आरे के प्रारंभ से भी आयुष्य, बल, वीर्य, सुख, वर्ण, गंध, रस और स्पर्शादि में वृद्धि होती रहेगी; भूमि भाग अत्यन्त समतल और रमणीय होगा। मनुष्यों में छः संस्थानों और छह संहननों में से अलग-अलग संस्थान और संहनन पाया जाएगा। उनकी अवगाहना-शारीरिक ऊंचाई अनेक धनुष परिमित होगी। तीसरे आरे के जीवों का जघन्य आयुष्य अंतमुर्हूत और उत्कृष्ट आयुष्य पूर्व कोटि वर्ष प्रमाण होगी। अपने आयुष्य को भोगकर कई जीव नरकगति तो कई जीव देवगति तो कई जीव मनुष्य और कई जीव तिर्यचगति में पैदा होंगे तो कुछ जीव सिद्धिगति में भी जा सकते हैं। तीसरे आरे में ही तीर्थंकर, चक्रवर्तीवंश एवं दशारवंश उत्पन्न होंगे; जिनके अंतर्गत 23 तीर्थंकर, ग्यारह चक्रवर्ती, नौ बलदेव और नौ वासुदेव होंगे। तीसरे आरे का कुल कालमान 42 हजार वर्ष न्यून एक कोटा-कोटि सागरोपम होगा। तीसरे आरे के पूर्ण हो जाने पर।

इस भरत क्षेत्र में चौथा आरा प्रारंभ हो जाएगा। चौथे आरे का नाम है सुषम-दुषमा। इस आरे का कुल कालमान है दो कोड़ा-कोड़ी सागरोपम। इस चौथे आरे में भी आयुष्य बल, वीर्य, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादि गुणों की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी। चौथे आरे के कुल कालमान के तीन विभाग किये जाते हैं। पहले कालविभाग में इस भरतक्षेत्र का भूभाग अत्यंत रमणीय, कृम, अकृम पंचवर्णी मणियों से सुशोभित होगा। अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे के तीसरे विभाग में जिस तरह के मनुष्यों का वर्णन किया गया है वैसे मनुष्य उत्सर्पिणी काल संबंधी चौथे आरे के पहले तृतीय विभाग में पाए जाएंगे। केवल अंतर इतना ही कि किस कालविभाग में कुलकर नहीं होंगे और दंडनीतियां अवसर्पिणी काल के क्रम से विपरीत यानि पहले धिक्कार नीति, तत्पश्चात माकार नीति और तत्पश्चात् हाकार नीति होगी। इस चौथे आरे के प्रथम तृतीयांश में राजधर्मादि यावत् चारित्रधर्म का विच्छेद होगा। चौथे आरे के दूसरे और तीसरे तृतीयांश अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे के तीन तृतीयांशों में से क्रमशः दूसरे और पहले तृतीयांश जैसी स्थिति होगी।

उत्सर्पिणी काल संबंधी पांचवें आरे का नाम होगा सुषमा और छट्ठे आरे का नाम होगा सुषमा-सुषमा। इन दोनों आरों में मनुष्यों एवं प्रकृति की स्थिति होगी अवसर्पिणी काल संबंधी द्वितीय और प्रथम आरे के जैसी।

सात कुलकर कर ?:- 1- विमल वाहन, 2- चक्षुष्मंत, 3- यशमंत, 4- अभिचंद्र, 5- प्रसेनजित, 6- मरुदेव, 7- नाभि।

क्या आप जानते हो ????

**** राणकपुर तीर्थ में पहले 84 भूगर्भ थी। अभी केवल 9 ही भूगर्भ है। ये जिनालय में अलग-अलग 76 शिल्प की सजावट है एवं हर देरासर के उपर 20-20 प्रकार की कारीगरी है ?***

**** ये मंदिर धरणाशाह ने बनाया था। धरणाशाह को ये मंदिर 9 मंजिल का बनाने की इच्छा थी मगर उनका अंत समय नजदीक समय होने से 3 मंजिल ही बनवाया।***

**** इस मंदिर की प्रतिष्ठा के समय 4 आचार्य, 9 उपाध्याय, 7500 अलग-अलग गच्छ के साधु थे।***

**** श्री पाल राजा तथा 700 कोठीयों के 18 प्रकार के कोठ उज्जैन में केसरियाजी की प्रतिमाजी के सामने श्री सिद्धचक्र यंत्र के जलस्थान से दूर हुआ था एवं वह प्रतिमाजी अभी मेवाड़ में धुलेवा गांव में है।***

अष्ट मंगल-एक विवेचन

✽ श्री उपेन्द्रमुनि शास्त्री

मनुष्य लोक में विभिन्न परम्पराओं एवं मान्यताओं के मुताबिक अनेक मांगलिक द्रव्य माने जाते हैं। जैसे कोई अग्नि को शुभ मानता है तो कोई दही को।

ऐसे ही स्वस्तिक यावत् दर्पण तक अष्टमंगल द्रव्य भी यात्रा पर एवं विशेष कार्य हेतु गमन करने पर दिखाई देना भी मांगलिक ही होता है।

श्री औपपातिक सूत्रानुसार जिस समय महाराजा कोणिक ज्ञातपुत्र श्रीमहावीर के दर्शनार्थ जा रहे थे तब हस्तिरत्न पर आरुढ़ होते ही उनके सामने अष्टमंगल द्रव्य अनुक्रम से संप्रतिष्ठित हुए अर्थात् चलने लगे। मूल पाठ इस प्रकार है-

''तएण तस्स कुणियस्स रण्णो भंभसार पुत्रस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुडस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठ मंगलया पुरओ अहा षुपुब्लीए संपठ्ठ्या, तंजहा-सोबत्थिय सिखिच्छ- णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण कलस-मच्छ- दप्पणा।''

भंभसार अर्थात् श्रेणिक के पुत्र कोणिक राजा के आभिषेक्य हस्तिरत्न पर सवार होते ही सर्वप्रथम उनके आगे-आगे प्रस्तुत मांगलिक द्रव्य चलने लगे, यथा-

1- स्वस्तिक, 2- श्री वत्स, 3- नन्द्यावर्त, 4- वर्धमानक 5- भद्रासन, 6- कलश, 7- मत्स्य और 8- दर्पण।

ये अष्ट मंगल है। इन मंगल द्रव्यों का किसी यात्रा, व्यापारिक कार्य एवं धार्मिक अनुष्ठान हेतु गमन करने के समय प्रकट होना, दिखाई देना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

1- स्वस्तिक- स्वस्तिक अष्टमंगलों में प्रथम मंगल है। यह उर्ध्वगमन का प्रतीक एवं चतुर्विध संसार का बोधक है।

भगवान कहते हैं- **चउत्वहे संसारे पण्णत्ते तंजहा- णेरइयसंसारे है, तिरिक्खा जोलिया संसारे, मण्णुयसंसारे देवसंसारे अर्थात् संसार चार प्रकार का है- यथा-नरक संसार, तिर्यच संसार, मनुष्य संसार तथा देव संसार।**

नारक जीवों का सम्पूर्ण आयुष्य कष्टमय है, दुःखदायी है। नरक में क्षण भर के लिये उपलब्ध नहीं होती।

इसी प्रकार पशु योनि में उत्पन्न हुआ जीव भी अपने सुख दुःख को व्यक्त नहीं कर सकता। परिणाम स्वरुप उसे भी भूख-प्यास आदि परिषह अनावश्यक सहन करने पड़ते हैं। देवलोक में रहने वाले देवी-देवता भी ईर्ष्या-द्वेष एवं बड़े-छोटे का भेद-भाव होने के कारण दुःखी रहते हैं। अतः देवलोक में भी एकांत सुख उपलब्ध नहीं होता।

रही मनुष्य की बात। वह संसार के भयों से उद्विग्न होकर उर्ध्वगमन अर्थात् मोक्षमार्ग की एवं मोक्ष के उपायों की अन्वेषणा करता है। मोक्ष एवं उसके उपायों की अन्वेषणा करके उसे हस्तगत करने के लिये सार्थक प्रयास करता है, अर्थात् उत्कृष्ट साधना करता है और उत्कृष्ट साधना करना उर्ध्वगमन का सर्वश्रेष्ठ उपाय एवं रमणीक प्रतीक है।

2-श्री वत्स- यह दूसरा मंगल है तथा सौभाग्य का प्रतीक है। वह नारी अपने मस्तक पर कुमकुम की बिंदिया लगाया करती है और केशों की मांग में सिंदूर भरा करती है जिसका पति जीवित हो। एक महिला अपने पति के जीवित रहने को सर्वोत्तम सौभाग्य मानती है और अपने भाग्य की सराहना करती है।

जिस समय राजा कोणिक के सामने **''श्री वत्स''** प्रकट हुआ, उस समय वे अरिहंत श्रीमहावीर के दर्शनार्थ जा रहे थे। एक छद्मस्थ एवं आरंभ-समारंभ करने वाले व्यक्ति को सर्वज्ञ-सर्वदर्शी के दर्शनों एवं प्रवचनों का साक्षात्कार हो- इससे अधिक सौभाग्य की और क्या बात होगी ?

3-नन्द्यावर्त- यह तृतीय मंगल है। यह प्रसन्नता एवं सुरक्षा का प्रतीक है। जब राजा कोणिक भगवान महावीर की पावन निश्रा में जा रहे थे, तब उनके अन्तःकरण में अत्यंत प्रसन्नता थी। प्रसन्नता के दो कारण थे। यथा- 1- चतुरंगिणी सेना से आवृत्त अर्थात् घिरे हुए होने के कारण राजा कोणिक सुरक्षित थे, उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं था। दूसरा कारण था- नगर की जनता के द्वारा की गई अनुनय, विनय एवं भव्य स्वागत।

इस तरह से गणीय आचार्य, साधु, साध्वी, श्रावक-

श्राविका रुप चतुविध संघ के मध्य उच्च आसन पर आसीन होकर प्रसन्नचित होते हैं तथा दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप की सम्यक् आराधना करते हुए अपनी आत्मा को सुरक्षित समझते हैं अतः नन्द्यावर्त प्रसन्नता एवं सुरक्षा का द्योतक है।

4- वर्धमानक- वर्धमानक शब्द को पढ़ने मात्र से ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि, इस चिन्ह के दृष्टिगोचर होने से निश्चय ही भौतिक या आध्यात्मिक लाभ की प्राप्ति होगी।

जब वर्धमान श्रीमहावीर अपनी माता महारानी त्रिशाला की रत्नकुक्षि में अवतरित हुए तो जहां राजा सिद्धार्थ को भौतिक लाभ हुआ, सम्पत्ति एवं यश की प्राप्ति हुई, वहीं उनकी धार्मिक भावना बढ़ी और उन्हें मानसिक शांति भी मिली।

इस प्रकार श्रमण भगवान श्रीमहावीर से सम्पर्क में आने पर राजा कोणिक को यश मिलना एवं उनकी शासन सत्ता में चार चांद लगे। सिद्ध होता है कि ''वर्धमानक'' लाभ एवं यश का उज्ज्वल प्रतीक है।

5- कलश- जल या अमृत से भरा कलश भी मांगलिक माना गया है। लोकव्यवहार में ऐसा देखने में आता है कि कोई व्यक्ति कार्य विशेष के लिये घर से निकला, देखा कोई महिला जल से आपूरित कलश सिर पर उठाये आ रही है तो यह सोच लेता है कि निश्चय ही मेरा कार्य सफल होगा। कहा भी है-जाकि रही भावना जैसी, प्रभु मूर्ति देखी तिन तैसी।

इसके अनुसार उसका कार्य भी निर्विन्ध रुप से पूर्ण हो जाता है। तदनतर उसे आत्म तुष्टि भी होती है। असन्तुष्ट राजा कोणिक को भगवान के पास जाकर ही संतोष हुआ। जल से भरा कलश हमें दूसरी वह शिक्षा देता है कि जैसे जल से शरीर के मैल का निवारण होता है उसी प्रकार ज्ञानामृत का सेवन करने से कर्म रुपी मैल का निवारण होता है। अतः कलश भी शुद्धता एवं मांगल्य का प्रतीक है।

6-भद्रासन- यह मंगल न्याय का प्रतीक है। कोमल आसन को ही भद्रासन नहीं कहा जा सकता। भद्रासन तो वह होता है जिस पर विराजमान होकर अरिहंत भगवान निर्दोष देशना की प्ररुपणा करते है अथवा एक न्यायाधीश जिस आसन पर बैठकर सच्चाई का पक्ष लेता है, उसी आसन को भद्र एवं कल्याणकारी माना गया है।

7- मत्स्य- मत्स्य जल का संयोग पाकर ही जीवित रह सकता है और गति कर सकता है। जल के अभाव में मत्स्य न तो जीवित रह सकता है, न ही गति कर सकता है। ठीक इसी प्रकार हमारी आत्मा रुपी मत्स्य धर्म रुपी जल के संयोग के बिना उर्ध्वलोक की और गति नहीं कर सकती। यथा पतंग आकाश में तभी तक उड़ती है। जब तक वह सूत्र के साथ आबद्ध है। धागा टूटा नहीं कि वह धराशायी हो जाती है। हम भी उर्ध्वगति तब तक कर सकते हैं जब तक हम धर्म के साथ जुड़े रहेंगे। धर्म के अभाव में जीवन, जीवन नहीं रहता। कहा भी है कि-

हाथ बिन नाड़ी के जैसे जल बिना तालाब है।
फूल बिन खुशबू के और प्रकाश बिन महताब है।
चांद बिन जैसे अंधेरी और सूनी रात है-
इसी तरह धर्म के बिना मानुष की जात है॥

8- दर्पण- दर्पण दो प्रकार का होता है- द्रव्य दर्पण और भाव दर्पण। द्रव्य दर्पण में हम शरीर की आकृति देख सकते है। ज्योतिष में सोमवार और शनिवार को पूर्व दिशा में जाना अशुभ माना है। यदि आवश्यक कार्य हेतु जाना ही पड़े तो दर्पण देखकर जायें तो उससे दिशा-शूल टल जाती है।

इसी तरह के कर्म शूल चढ़ने पर ज्ञान रुपी दर्पण में देखकर चलने पर कर्म रुपी दिशा शूल भी टल जाती है। अतः दर्पण हमारे सामने वास्तविकता को प्रकट करता है, जिससे हम आध्यात्मिक पथ का दर्शन कर सकते हैं। अष्टम् मंगल दर्पण

गुरु है भगवान का रुप

अप्पसुए वि सुहेसी हवइ मणागं पमायसीलो वि।
तहवि हु सो सीसेहिं पूइज्जइ देवयं व गुरु॥

- श्री धर्माचार्य बहुमान

अर्थात्- यदि गुरु अल्पज्ञानी हो या फिर थोड़े सुखशील अथवा प्रमादशील हो तो भी शिष्य ने गुरु को देव=भगवान की भांति पूजना=आराधना चाहिए।

पांच प्रकार से आयुष्य टूटता है ?

1- पानी में चेहरा देखने से।
2- रुधिर में चेहरा देखने से।
3- शस्त्र में चेहरा देखने से।
4- तेल में चेहरा देखने से।
5- पेशाब में चेहरा देखने से।

अंतिम केवली श्री जंबुस्वामीजी

*श्रीमुक्तिप्रियाश्रीजी

Let Us Understand The Reason

चरम तीर्थपति भगवान महावीर स्वामी अनेक भव्यात्माओं को प्रतिबोध देते हुए एक बार राजगृही नगरी के बाहर गुणशील चैत्य में पधारे। देवताओं ने समवसरण की रचना की। प्रभु की धर्मदेशना का अमृतपान करने चारों ओर से नर-नारी उमड़ पड़े।

प्रभु महावीर के शासन में अंतिम केवली श्री जंबुस्वामी ने पूर्व में कौन सी विशिष्ट साधना की थी जिससे शादी की प्रथम रात्रि में ही आठो पत्नियों को उन्होंने वैराग्यवासित बना दिया ?

भवनिर्वेदकारी देशना की समाप्ति के बाद श्रेणिक महाराजा ने विनयपूर्वक पूछा- हे प्रभो ! आपके शासन में अंतिम केवली कौन होगा ? प्रभु ने कहा- ''यह जो विद्युन्माली देव है वह आज से सात दिन बाद देवायु को पूर्णकर इसी राजगृही नगरी में ऋषभदास सेठ का पुत्र ''जम्बुकुमार'' होगा। वही मेरे शासन का अंतिम केवली होगा।

महावीर प्रभु के मुख से यह सुनकर श्रेणिक राजा ने साश्चर्य पूछा- ''प्रभो'' ! इस देव की अद्‌भूत कांति और देह-सौंदर्य को देखकर तो ऐसा लगता है कि यह अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो ! च्यवन काल निकट होने पर भी ये देव इतना तेजस्वी कैसे ?

प्रभु ने कहा- हे श्रेणिक ! जो देव एकावतारी होते है उनके देह की कांति क्षीण नहीं होती है। ये देव एकावतारी है और इसने पूर्व भव में बहुत ही सुंदर आराधना की थी। जो इस प्रकार है-

महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय में वीतशोक नगरी थी। वहां के पद्‌मरथ राजा की महारानी वनमाला ने एक पुत्ररत्न को जन्म दिया। राजा ने पुत्रजन्म का भव्य महोत्सव किया और एक शुभ दिन बालक का ''शिवकुमार'' ऐसा नामकरण किया।

शिवकुमार धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। यौवन के प्रांगण में प्रवेश होने पर अनेक राजकन्याओं के साथ उसका पाणिग्रहण हुआ। एक बार सागरदत्त महामुनि उसी नगर के बाहर उद्यान में पधारे। मुनि के मासक्षमण की पूर्णाहुति पर ''कामसमृद्ध'' नामक सार्थवाह ने तपस्वी मुनिवर को पारणा करवाया। इस सुपात्रदान के प्रभाव से देवताओं ने आकाश से वसुधारा की वृष्टि की।

लोगों के मुख से इस वृत्तांत को सुनकर शिवकुमार भी मुनिदर्शन के लिए उद्यान में आया। मुनि को वंदन कर वह योग्य स्थान पर बैठा। चौदह पूर्व के ज्ञाता श्रुतकेवली सागरदत्त महामुनि ने धर्मदेशना प्रारंभ की जिसे सुनकर शिवकुमार को वैराग्य हो गया। देशना समाप्ति के बाद शिवकुमार ने पूछा- ''प्रभो ! आपको देखकर मेरे दिल में अधिकाधिक हर्ष उत्पन्न हो रहा है तो क्या आपका व मेरा पूर्वभव का कोई संबंध है ? मुनिवर ने कहा- हाँ ! पूर्वभव में तुम मेरे प्राणप्यारे छोटे भाई थे। तुम्हारी व्रतग्रहण की इच्छा नहीं होने पर भी तुम्हारे आत्महित को ध्यान में रखकर मैंने तुम्हें दीक्षा दिलाई थी और उस दीक्षा के प्रभाव से ही तुम और मैं मर कर सौधर्म देवलोक में देव बने थे। वहां से च्यवकर मैं सागरदत्त बना और तुम शिवकुमार बने।

शिवकुमार ने कहा- ''गत भव में चारित्र के प्रभाव से मैं देव बना था अतः इस भव में भी मेरे उद्धार के लिए आप मुझे चारित्र प्रदान करो। मैं घर जाकर माता-पिता से अनुमति लेकर आता हूं, तब तक आप यहीं स्थिरता करो। शिवकुमार ने घर आकर माता-पिता को समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। वे बोले कि यदि तू हमारी अनुमति के बिना भी दीक्षा ले लेगा तो तेरे वियोग की पीड़ा से हम ऐसे ही मर जायेंगे।

माता-पिता के वचनों को सुनकर शिवकुमार को अत्यन्त ही आघात लगा। वह सोचने लगा- ''अहो ! मोह का बंधन कितना गाढ़ है। अब मैं क्या करुं ? एक उपाय है कि जब तक द्रव्य दीक्षा की अनुमति ना मिले तब तक घर में ही भाव साधु के रुप में जीवन व्यतीत करूं ?'' इस प्रकार विचार करके उसने समस्त सावद्य योगों का त्यागकर भाव से दीक्षा स्वीकार कर ली और भाव से ही सागर दत्त मुनि का शिष्य बन गया। उसी दिन से उसने मौन व्रत धारण कर लिया। जब माता-पिता ने उसे भोजन के लिये आग्रह किया तब उसने कुछ भी खाने से इंकार कर दिया। कुछ दिनों तक जब शिवकुमार ने न खाया न पिया, न ही किसी से कुछ बोला तो माता-पिता को

अत्यन्त ही चिंता सताने लगी। आखिर पिता ने उसके मित्र ''दृढ़धर्म'' श्रावक को बुलाकर कहा- ''दीक्षा की अनुमति नहीं देने के कारण शिवकुमार ने मौन धारण कर लिया है, वह कुछ भी खाता-पीता नहीं है अतः तुम उसे समझाओ और भोजन के लिये तैयार करो। राजा की आज्ञा से दृढ़धर्म मित्र शिवकुमार के कक्ष में पहुंचा और उससे भोजन ग्रहण का आग्रह किया।

शिवकुमार बोला- मेरी दीक्षा लेने की भावना है परन्तु माता-पिता अनुमति नहीं दे रहे है इसलिये मैंने आहरादि का त्याग किया है। शायद इसी से मेरा कार्य सिद्ध हो जाए। दृढ़धर्म ने कहा- मित्र ! यद्यपि आपका उद्देश्य शुभ ही है तथापि भोजन तो जरुरी है, उसके बिना शरीर कैसे टिकेगा ? महर्षि भी जीवन धारण हेतु निर्दोष आहार लेते ही है। शिव कुमार ने कहा- यहां मुझे निर्दोष आहार कैसे मिल सकेगा ? दृढ़धर्म ने कहा- मैं आपके लिए निर्दोष भिक्षा ले आऊंगा।

शिवकुमार बोला- ठीक है, मैं तुम्हारी बात स्वीकार करता हूं परन्तु मैं हमेशा बेले के पारणे आयंबिल करुंगा। बस, तब से दृढ़धर्म शिवकुमार की सेवा भक्ति करने लगा। इस प्रकार निरंतर बेले के पारणे आयंबिल का तप करते हुए भावसाधु बने शिवकुमार को बारह वर्ष बीत गए, फिर भी उसके माता-पिता ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी। अंत में अत्यंत ही समाधिपूर्वक कालधर्म पाकर शिवकुमार पांचवें ब्रह्मदेवलोक में विद्युन्माली नाम का देव बना।

हे श्रेणिक ! पूर्वभव की श्रेष्ठ आराधना के फलस्वरुप सात दिन बाद ही इस देव का च्यवन होने पर भी यह कांतिमान और तेजस्वी है।

प्रभु के मुखारविंद से चरमकेवली जम्बुस्वामी के पूर्वभव का रोमांचक वर्णन सुनकर श्रेणिक राजा बहुत प्रसन्न हुए और भावपूर्वक उसकी अनुमोदना करने लगे।

विद्युन्माली देव ने देवायु पूर्ण करके राजगृही के ऋषभदत्त श्रेष्ठि की पत्नी धारिणी की कुक्षी में अवतार लिया। एक शुभ दिन धारिणी ने सूर्यसम तेजस्वी पुत्ररत्न को जन्म दिया। ऋषभदत्त सेठ ने हर्षोल्लास पूर्वक पुत्र का जन्म-महोत्सव मनाकर ''जम्बुकुमार'' ऐसा नामकरण किया। दूज के चांद की भांति जम्बुकुमार देह और बुद्धि से विकसित होने लगा।

जम्बुकुमार ने जब युवावस्था में प्रवेश किया तब एक दिन राजगृही के अत्यंत समृद्धिशाली आठ श्रेष्ठियों ने ऋषभदेव के पास आकर निवेदन किया- ''हे श्रेष्ठिवर्य ! रुप-लावण्य और गुणों की खान स्वरुप हम सबके एक-एक कन्या है, वे यौवन वय को प्राप्त हो चुकी है अतः हम चाहते है कि गुणसमृद्ध आपके पुत्र जम्बुकुमार के लिए आप हमारी कन्याओं को स्वीकार करें।

ऋषभदेव ने भी पुत्र के लिए हर तरह से योग्य कन्याओं को जानकर सहर्ष श्रेष्ठियों की प्रार्थना स्वीकार कर ली। आठ कन्याओं को जब पता चला कि उनका विवाह-संबंध जम्बुकुमार के साथ तय हुआ है तो वे भी अत्यन्त खुश हो गई।

किसी समय भगवान महावीर स्वामी के पंचम गणधार सुधर्मा स्वामीजी राजगृही के बाहर उद्यान में पधारे। उनके आगमन के समाचार जम्बुकुमार एकदम रोमांचित हो उठा और तत्क्षण अन्य सभी प्रवृत्तियों को छोड़कर धर्म देशना श्रवण हेतु घर से निकल पड़ा। देशना श्रवण कर जम्बुकुमार का मन वैराग्य रंग से रंजित हो उठा, उसने हाथ जोड़कर कहा- हे प्रभो ! मैं शीघ्र ही भव के बंधन से मुक्त होना चाहता हूं। आप मुझे आर्शीवाद प्रदान करें, मैं माता-पिता की अनुमति लेकर अभी आता हूं।

ऐसा कहकर जम्बुकुमार रथारुढ़ हुआ और नगर के द्वार पर आ पहुंचा। द्वार पर बड़े-बड़े यंत्र लगे हुए थे और उन यंत्रों में बड़ी-बड़ी शिलायें लगी हुई थी। जम्बुकुमार ने सोचा कि- ''यदि इस द्वार से प्रवेश करते संयोगवश कोई शिला मेरे ऊपर गिर गई तो मेरी अविरति अवस्था में ही मृत्यु हो जाएगी। ऐसा होने पर आत्मा की दुर्गति ही होगी अतः क्यों न मैं सुधर्मा स्वामीजी के पास जाकर पहले व्रत स्वीकार कर लूं ताकि मेरी आत्मा का रक्षण हो सकेगा।'' यह सोचकर जम्बुकुमार पुनः सुधर्मा स्वामी के पास उद्यान में आए और वंदन कर बोले- प्रभो ! मैं जीवन-पर्यत मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करना चाहता हूं। जम्बु की प्रार्थना होने से सुधर्मा स्वामी ने उसे प्रतिज्ञा दे दी।

जम्बुकुमार ने घर पहुंच कर माता-पिता से दीक्षा की अनुमति मांगी। उन्होंने इन्कार करते हुए कहा- कुछ भी हो जाए शादी तो करनी पड़ेगी। जम्बु ने कहा- आपका इतना ही आग्रह है तो शादी कर लूंगा परन्तु दूसरे ही दिन मैं संयम स्वीकार करुंगा, यह मेरा दृढ़ निर्णय है।

कन्याओं के पिताओं को भी यह जानकारी दे दी गई,

कन्याओं का एक ही निर्णय था कि-अब हमारा जीवन उन्हीं के अधीन है, उनकी जो गति हो वह हमारी भी गति हो। दोनों पक्ष में लग्न की जोर शोर से तैयारियां होने लगी और शुभ मुर्हूत में बड़ेधूमधाम से जम्बुकुमार का उन आठ कन्याओं के साथ पाणिग्रहण हो गया। जम्बुकुमार ने संध्या के समय अपने शयनगृह में प्रवेश किया, उसकी आठों पत्नियां उसके इर्द-गिर्द आकर बैठ गई।

जम्बुकुमार और पत्नियों के बीच में रातभर भोगमार्ग और योगमार्ग की चर्चा चलती रही। अंत में योगमार्ग जीता, भोगमार्ग हारा। जम्बुकुमार के दृढ़ वैराग्यभाव ने आठों ही पत्नियों के मन में भी वैराग्य की ज्योति प्रकट कर दी। वे सभी अपने स्वामी के साथ दीक्षा लेने को तैयार हो गई। यहां तक कि चोरी करने आए चोरों के सरदार प्रभव को भी वैराग्य हो गया। वह अपने 500 साथियों के साथ दीक्षा लेने को तैयार हो गया। मोह के जटिल बंधनों में फंसे हुए उन सभी के माता-पिता भी दीक्षा लेने तैयार हो गए।

प्रातःकाल की मधुर वेला में राजगृही नगरी में मंगलवाद्य बज उठे। पुण्यसमृद्ध एवं गुणसमृद्ध जम्बुकुमार रथारुढ़ हुआ और जम्बुकुमार के साथ ही 527 पुण्यशाली आत्माओं का यह अतिभव्य जुलूस क्रमशः आगे बढ़ते हुए गुणशील चैत्य में पहुंचा। गणधर सुधर्मा स्वामी के वरद हस्तों से सभी ने भागवती दीक्षा अंगीकार की। जम्बुकुमार सुधर्मा स्वामी जी के शिष्य बने और प्रभव को जम्बुस्वामी के शिष्य के रुप में स्थापित किया।

जम्बुस्वामी सूक्ष्मप्रज्ञा के धारक होने से अल्पकाल में ही संपूर्ण द्वादशांगी के ज्ञाता बन गए। वि.सं. पूर्व 450 में 36 वर्ष की वय में जम्बुस्वामी को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। वे प्रभु महावीर के शासन में अंतिम केवली हुए।

चार कथाएं चार संज्ञायें बढ़ाती है...!

स्त्री कथा- मैथुन-संज्ञा बढ़ाती है।

भक्त कथा- आहार-संज्ञा बढ़ाती है।

देश कथा- भय-संज्ञा बढ़ाती है (पड़ोसी देशों की सेना की बात सुनकर युद्ध आदि का भय लगता है।)

राज कथा- परिग्रह-संज्ञा बढ़ाती है। (राजाओं के वैभव का वर्णन सुनकर वैसी-वैसी वस्तुएं लाने की इच्छा होती है।)

जरुरी है क्या परिवर्तन ?

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। कल जो था आज या तो उसका रुप स्वरुप बदल गया है या फिर वो आज है तो शायद कल नहीं। आज जो है, कल उसका भी यही हाल होना है। इसी नियम के अंतर्गत हमारे शरीर में भी जो परिवर्तन होते रहते हैं। कल जो जवान थे आज बूढ़े हो चुके है। कल सामाजिक तथा पारिवारिक मान्यताएं कुछ ओर थी, तो आज सामाजिक तथा पारिवारिक मान्यताएं कुछ और है। समय-काल परिस्थितियों के अनुसार सामाजिक परिवेश बदलता रहता है। हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम परिवर्तन को सहज स्वीकार नहीं करना चाहते और हम अपने जमाने की मान्यताओं से चिपके रहना चाहते हैं। स्वयं को वर्तमान के अनुरुप बनाने की बजाय नए जमाने और नई पीढ़ी को कोसते भर रहते हैं। परिवर्तन को स्वीकार न करने की हमारी विकराल समस्या ही हमारे दुःख का मूल आधार है। यदि हम परिवर्तन की पीढ़ी को संस्कार हीन कहेंगे। तो क्या वर्तमान पीढ़ी हमारी अवहेलना नहीं करेगी ? जरुरी है वर्तमान पीढ़ी की भावनाओं तथा मान्यताओं को समझाकर उनके साथ सामंजस्य बैठाने की। उन्हें समझाने की कोशिश करेंगे तो वे भी अवश्य आपको समझने का प्रयास करेंगे। प्रेम से प्रेम बढ़ता है और क्रोध से क्रोध, घृणा से घृणा। आप अपने को प्रेम दीजिए और विश्वास मानिये की उसके बदले में आपको प्रेम ही मिलेगा। पर ऐसा करना तभी संभव है जब हम परिवर्तन को स्वीकारे। एक बार परिवर्तन को स्वीकार कर देखियें आप स्वयं सुखी अनुभव करेंगे।

समय कभी एक जैसा नहीं रहता, न रहा है न रहेगा, इतिहास साक्षी है कि जहां आज मरुथल है वहां कभी सागर लहराता था, जहां मैदान है वहां गगन चूमती पर्वतमालाएं प्रकृति का श्रृंगार करती थी, अब शर्म आंखों में थोड़ी दिखाई पड़ती है, घूंघट के पट खुल गए, पाषाण युग की सभ्यता में सुधार हुआ, अर्धनग्न सभ्यता का प्रारम्भ हुआ है और उसका अन्त कैसा होगा। यह भी परिवर्तन का एक हिस्सा बन गया है। रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल, शिक्षा, रीति-रिवाज और धार्मिक परम्पराओं में नित-नूतन बदलाव आम हो चुका है।

✽ बरसात गिरी और कानों में इतना कह गई : गर्मी हमेशा किसी की भी नहीं रहती।

आरती की रचना किसने की...!

आरती की रचना किसने की और.... मूलचंदजी भोजक एक ऐसे जैन श्रावक थे, जो धुलेवा नगर (केसरियाजी तीर्थ) में रहते थे। नित्य रोज, सुबह-शाम तीन-तीन घंटे दादा-दादा करते, दूसरा कुछ भी नहीं ! लोगों के लिए नहीं। आदिनाथ भगवान की भक्ति के लिये गाते थे। समय के साथ ढलती उम्र गुजरते 60 साल बीत गये, 60 वर्षों तक निरंतर सुबह-शाम अखंड भक्ति करते रहे, एक भी दिन खाली नहीं गया, एक भी दिन फुरसत से कहीं गये नहीं।

एक दिन मूलचंदजी की लड़कियां वड्नगर गुजरात से लेने आई। पिताजी आप हमारे साथ चलो। मूलचंदजी रोते हुए बोले, इस भगवान को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। लड़कियों ने पूरा सामान बांध लिया, फिर तैयार हो गये।

मूलचंदजी प्रभु के पास गये, हुसके-हुसके रोने लगे, प्रभु ! मैंने तेरी भक्ति में क्या कमी रखी, जो आज तक, तेरा और मेरा ये नाता तोड़ने का काम किया। 60-60 साल की अखंड तेरी भक्ति, एक पल में टूटकर चकनाचूर हो जाएगी, ऐसी कल्पना भी, नहीं थी मुझे। पैर चलते नहीं बुढ़ापे की उम्र थी। देरासर में से बाहर निकले, पैरों में झन झनाहठ हुई, वापस देरासर में गये, स्तवना की बाहर आयें, वापस पैरों में झनाहठ हुई, वापस देरासर में गये, ऐसा ! एक बार-दो बार-तीन बार-चार बार -पांच बार-छह बार, ऐसे सात बार अंदर गये वापस बाहर आये, आठवें बार अंदर गये और इतना रोये कि मुख से आवाज भी नहीं निकल रही थी।

हे प्रभो ! या तो यहां से मेरा शरीर मृत होकर बाहर जायेगा या फिर, प्रभु तुम्हारे साथ ही बाहर जाऊंगा, अथवा मैं ! अकेले नहीं जा सकता। 20 मिनट तक रोते हुए हाथ लम्बा कर भगवान के पास मूलचंदजी विनंती करते रहे, प्रभु ! साथ दो, मैं नहीं निकल सकता, इतना कहते ही, भगवान का दायां (जमणा) पैर का अंगूठा टूटकर, कुदरती मूलचंदजी के हाथों आया। मूलचंदजी अंगुठे को देखकर हर्षो उल्लास होकर बोले, भगवान आप ! आवाज आई हां ! इस अंगूठे में मैं ही हूं, ले जा इसे तेरे साथ।

मूलचंदजी गुजरात में किशनगढ़के पास वड्नगर गये। कहां केसरियाजी और वड्नगर का नया देरासर, और देरासर में प्रभु के अंगूठे की स्थापना कर, तीन घण्टे सुबह तीन घण्टे शाम, प्रभु की भक्ति मूलचंदजी ने अखंड रखी।

एक दिन वड्नगर संघ के लोगों को आश्चर्य हुआ और पूछा ? मूलचंदजी भगवान को छोड़कर, अंगूठे के साथ क्या मिलन होगा। तभी संघ एक बार आग्रहपूर्वक पूछते है ? मूलचंदजी अंगूठे की क्या महत्वत्ता है। तब मूलचंदजी कहते है....

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मुरुदेवी को नंदा.... नाभिराजा और मरुदेवी के पुत्र, हे.... आदिनाथ प्रभु ! आपकी आरती जयवन्त हो जयन्त हो।

पहली आरती पूजा कीजे.... नरभव पामीने लाहो लीजे.... मानव भव पाकर, पहली आरती से पूजा करके लाभ उठावें।

दूसरी आरती दीन दयाला.... धुळेवा मंडपमां जग अलवाला.... जिसने धुळेवा नगर (केसरियाजी) से जगत प्रकाशित किया है, ऐसे है.... दीनदयाल ! यह आपकी दूसरी आरती है, धुळेवा में प्रथम हमारा नाथ बैठा है....

तीसरी आरती त्रिभुवन देवा..., सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा.... देव मनुष्य और इन्द्र आपकी सेवा करते हैं ! ऐसे तीनों लोकों के स्वामी ! आपकी तीसरी आरती हैं।

चौथी आरती चउगति चुरे.... मनवांछित फल शिवसुख पुरे.... चार गति का नाश करके मनोवांछित फल-मोक्ष सुख को देनेवाली ! आपकी चौथी आरती है।

पंचमी आरती पुण्य उपाया.... मूळचन्दे ऋषभ गुण गाया.... पांचवीं आरती पुण्य प्राप्ति का उपाय है ऐसे मूलचंदजी ने श्री ऋषभदेव के गुण गाये।

ये मूलचंदजी भोजक भगवान को भी अपने साथ लेकर आये, कैसी अटूट भक्ति ! धन्य है हमारा जिनशासन।

संसार के संयोग क्षणिक

जह संझाए सउणाण संगमो जह पहे अ पहिआणं।
सयणाणं संजोगो तहेव खणभंगुरो जीव !॥

✻ श्री वैराग्य शतक

अर्थात्- जैसे शाम को जमा पंछीओं का मेला और मार्ग में हुआ मुसाफिरों का मिलाप चिरस्थायी नहीं होता वैसे हे जीव ! संसार में हुए स्वजनों के संयोग भी क्षणभंगुर है।

यह वर्ष
पूज्यपाद आगमोध्दारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा के जन्म का 150 वां वर्ष है जन्म दिवस श्रावण वदी अमावस्या दिनांक 4 अगस्त 2024 को आपके श्रीसंघ में पूज्यपादश्री के स्मरण स्वरुप पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन कर गुरु गौरव गाथा के साथ गुणानुवाद सभा करने की प्रेरणा है।

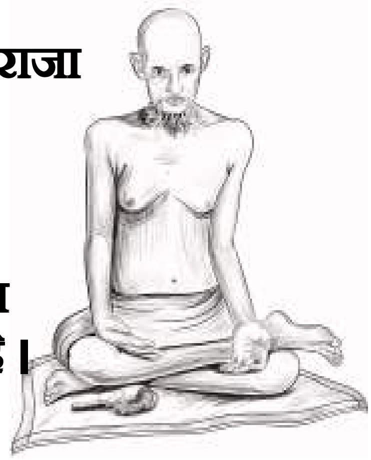

आगमोद्धारक तीर्थ सूरत और आगमवेत्ता सागर सूरिजी

✻ शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

साधना और साध्य के बीच बीसवीं शताब्दी में अपनी जन्म भूमि कपड़वंज से विहार कर प्रथम बार आगमोद्धारक आगमवेत्ता श्री आनन्दसागरसूरिजी महाराज ने ऐतिहासिक अवधारणाओं को समन्वय की स्थिति में लाने को सूरत में युद्ध शैली में पुरुषार्थ कर आगम ग्रंथों की साधारण से साधारण जानकारी को भी अपने कब्जे में करने के हर नेक प्रयास को हाथ से नहीं निकलने दिया। दिन का चैन और रात की नींद को तिलांजलि देकर जैन इतिहास-दर्शन के भागीदारों को विक्रम संवत् 1970 में जैन शासन के मंगलश्री चरणों में आगमग्रंथों की शाश्वत विरासत को श्रवण लाभार्थ योजना पूर्वक समर्पित कर दिया। आपश्री ने आगमों की अनुपम धरोहर को अपनी साधना का अभिन्न अंग बनाकर उसमें जीवन्तता के प्राण डालने को अकेले ही प्रस्तावना लेखन, प्रुफ रिडिंग (गलतियां सुधारना) प्रकाशन की व्यवस्थाओं को पूर्णरुपेण सद्व्यवस्थाओं का जामा पहनाने का भार वहन कर सफलता का मुंह तब देखा जबकि आपने वाचना के पश्चात प्रकाशित आगम से इस भ्रांतिपूर्ण धारणा को तारतार कर दिया कि आगम नष्ट हो गये हैं। यही नहीं अपने जीतेजी आगम मंदिर निर्माण की परिकल्पना साकार कर सार्थकता के चरम शिखर पर तीर्थंकर परमात्मा की देशना की पावन पवित्र वाणी को आगम शास्त्रों में पुनर्जीवित कर साहित्योपासना की साधना को प्रभावशाली वाणी देकर आगम सूत्रधारक के रुप अपने को बीसवीं शताब्दी का आगम शिरोमणी सिद्ध किया।श्री आनन्दसागरसूरिजी ने अखाण्ड साहित्याकाश के प्रेरणापुंज बन आगम जैन दर्शन संस्कृति को विस्त्तिर्ण/त्रिस्तिक क्षेत्र में फैलानी की पारम्परिक नैतिक जिम्मेदारी का वहन कर जैन दर्शन के आध्यात्मिक पहलू को हिमालयीन दिशा दिखाई है। विकारों को तिलांजलि देकर जीवन यापन करना वस्तुतः समभाव की साधना है। समभाव की साधना की सार्थकता तभी है जब साधक सम्पूर्ण कामनाओं को छोड़कर ममता और अहंकाररहित होकर आत्मा में रमण करते हुए सर्वप्रपंच शून्य आनन्द धन परिपूर्ण परमपद को प्राप्त कर ले और श्री आनंदसागर सूरिश्वरजी ने आगमोद्धारक का पुनित कार्य कर समाज को अपने संयमित मार्मिक जीवन क्रियाओं से सात्विक दृष्टि मिलाने को आगम दिव्यता के सोपान प्रदान किये हैं। पगडंडी पर विचारों की चेतना रेखाओं का संकलन, संवर्धन रुप जब चिंतन, मनन और अनुभव के बीच हमें प्रदान किया जाता है तो भटकनों के बीच समाज के लिये सुनिश्चित पथ तैयार हो जाता है। श्री आनंदसागरसूरिजी महाराज ने अप्राप्त स्थिति में पहुंचे आगम ग्रंथों को पहले कागज पर उनकी नकल करवाई, फिर उन्हें अमरता प्रदान करने को शिला उत्कीर्ण आगम कहानी खुद कहे इस हेतु भविष्य में शीला उत्कीर्ष आगम की अवधारणा को कार्य रुप में परिणित करने का कार्य श्री वर्धमान जैन तामपत्रागम मंदिर सूरत में शिला पर उत्कीर्ण अनुयोगद्वार ताम्रपत्र पर लगा कर किया है।

एतदर्थ बीसवीं शताब्दी के आगमवेत्ता पूज्यपाद आगमोद्धारक शिरोमणीरत्न श्री आनन्दसागर सूरिश्वरजी महाराज ने आगमों का उद्धार और उनमें जो जीवन्त प्राणों सी जीवन्तता को स्थापित कर उनको अमरत्व प्रदान किया वह निःसंदेह इस पावन शाश्वत आगमोद्धार महामनिषी की सर्वकालिक अमरता है। आपश्री के चरणों में वंदना, संत के संतत्व को शत्-शत् प्रणाम।

ब्याज की तरह प्रतिपल चले धार्मिक क्रियाएं...!

✻ गजेन्द्र ओसवाल

वर्षभर के 12 माह में वर्षाकाल के चार माह माने जाते हैं। उनमें से भी मात्र दो माह उससे भी कम दिनों में बारिश होती है। यह बारिश किन्हीं क्षेत्रों में अतिवृष्टि का रुप ले लेती है तथा किन्हीं क्षेत्रों में अनावृष्टि का रुप ले लेती है। अधिकतर स्थानों पर सामान्य अर्थात् औसतन बारिश होती है। वर्षाकाल के चार माह निकल जाने पर उसके पश्चात बारिश नहीं होती है। वर्तमान में ठीक ऐसी ही स्थिति धार्मिक क्रियाओं की हो गई है। चातुर्मास काल के भी चार माह होते है लेकिन उसमें होनेवाली अधिकतर धार्मिक क्रियाएं चातुर्मास काल के प्रथम दो मास में या उससे भी कम समय अर्थात् संवत्सरी पर्व पर्यन्त ही होती है। पश्चात के समय में धार्मिक क्रियाएं नाम मात्र की होती है।

वर्तमान में चातुर्मास काल में होनेवाली धार्मिक क्रियाओं की स्थिति वर्षाकाल में आने वाली बारिश के कुछ दिनों की तरह सिमट कर रह गई है। जो कि आत्मा से परमात्मा बनने के लिए काफी नहीं है। सम्यक्त्व रुपी सीढ़ी पर चढ़कर केवलज्ञान रुपी मंजिल से सिद्ध रुपी कुर्सी पर विराजमान होना है तो धार्मिक क्रियाओं को चातुर्मासकाल में आने वाली बारिश के सीमित दिनों जितने समय ही नहीं की जाकर उधार पर दिये जानेवाले धन से प्राप्त प्रति क्षण चलने वाले ब्याज की तरह करनी चाहिए। ब्याज प्रति सैकण्ड, प्रति मिनिट प्रति घंटा, प्रति दिन-रात, प्रति सप्ताह, प्रति पाक्षिक, प्रति मासिक, प्रति अर्द्धवार्षिक और प्रति वर्ष चलता-बढ़ता रहता है। ठीक उसी प्रकार हमारे जीवन में धार्मिक क्रियाएं हर समय चलने व बढ़ने वाले ब्याज की तरह चलती रहे व बढ़ती रहें। न जाने कब पानी के बुलबुले की तरह यह जीवन नष्ट हो जाये और सम्यग् दृष्टि अलेशी बनने के लिए अनन्त भवों में पुनः जन्म मरण करना पड़े। समय-दर-समय इस स्वार्थी जीवन की गतिविधियों को विराम देते हुए निःस्वार्थी धार्मिक जीवन की ओर प्रगति करना अतिआवश्यक है। प्रतिपल समय का सदुपयोग करते हुए जीवन में धार्मिक क्रियाएं बढ़ानी होगी। एक क्षण की निन्दनीय सोच भी दुर्गति का कारण बन सकती है। उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें द्रुमपत्राक नामक अध्ययन की प्रथम गाथा में बतलाया है किः-

दुमपतए पंडुयए जहा, णिवडइ राइ-गणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए॥

जिस प्रकार रात्रि और दिनों के गण अर्थात् समूह बीत जाने पर वृक्ष का पत्ता अवस्था अथवा रोगादि कारणों से पीला हो कर नीचे गिर पड़ता है। इसी प्रकार मनुष्यों का जीवन है। अतएव हे गौतम ! समय मात्र का भी प्रमाद मत कर। सभी प्रियजन, परिवारजन, बचपन के साथी, धन कमाने में सहयोगी कोई भी आत्मा को सर्वसिद्ध बनाने में समर्थ नहीं है। सर्वसिद्ध बनाने में समर्थ एक मात्र धर्म है। एतएव धर्म मात्र दो मास या चार मास ही करने का नहीं है। धर्म तो बारह मास करणीय है। धर्म कोई खरीफ की फसल नहीं है जो मात्र चातुर्मास काल में ही की जाये। वह तो आत्मा का निजस्वरुप है। आत्मा का निजस्वरुप का ज्ञान नहीं होने से हम स्वभाव को नहीं जानकर विभाव में उलझ रहे है। जिस प्रकार अपने निर्मित किये तन्तुजाल में मकड़ी स्वयं बंधती उलझती रहती है और रेशम का कीड़ा पत्तियें खा-खा कर अपनी ही लार में से निकले हुए स्निग्ध तारों के बंधनों में आबद्ध होकर, रेशम निर्माताओं द्वारा मार दिया जाता है, उसी प्रकार आत्मा भी अपनी बुरी प्रवृत्तियों से अपने लिये बंधनों का निर्माण कर शुभाशुभ कर्म बंधनों से बंधती रहती है। इससे छुटकारा पाने के लिये हमें अपनी आत्मा को धार्मिक क्रियाओं में सदैव संलग्न रखना है। जो प्रतिपल चलने वाले ब्याज की तरह चलती रहे, बढ़ती रहे तथा कभी-कभी चक्रवृद्धि ब्याज के समान धार्मिक क्रियाओं में भी दिन दुनी व रात चौगुनी वृद्धि करने का भी लक्ष्य रखना चाहिये।

अतः धर्म को चातुर्मास काल में होने वाली बारिश के कुछ सीमित दिनों की तरह नहीं कर उधार दिये हुए धन पर प्रतिपल प्राप्त होनेवाले ब्याज की तरह करें ताकि धर्म मात्र चार मास या दो मास की विषय वस्तु बनकर ही न रह जाये अपितु आत्मा में सदाबहार रहकर उसे पुष्पित, पल्लवित व सरसब्ज बनावे। चातुर्मास के पश्चात भले ही गुरुओं का सानिध्य न भी मिले परन्तु धार्मिक क्रियाएं निराबाध अनवरत गति से चलायमान होती रहे जिससे किसी भी पल आने वाली मृत्यु हमारे लिए महोत्सव बन जाये। इसलिए आत्मशोधक आत्मार्थी का कर्त्तव्य है कि जिनेश्वर भगवंत प्ररुपित प्रवचन पर दृढ़ीभूत-अटूट श्रद्धा रखकर यथाशक्ति साधना आराधना में प्रवृत्त होवे जिससे चातुर्मासकाल ही नहीं शेषकाल व सर्वकाल फलीभूत हो जाये।

सत्संस्कार ही परम धन है

✻ निलेशजी नान्देचा जैन

हर अभिभावक भलीभांति इस बात को जानते है कि उसके आने वाले कल की पहचान और उनके भविष्य के कर्णधार उनकी संतान ही है। वस्तुतः व्यक्ति अपनी इस संतान के लिए जीवन की अंतिम श्वास तक सब कुछ अधिक से अधिक करने की कोशिश भी करते रहते है। प्रायः व्यक्ति सोचता है मेरी संतान आने वाले समय में दुःख नहीं देखे, वह सम्पन्न हो, धनवान हो, शोहरत-प्रतिष्ठा युक्त जीवन यापन करें आदि-आदि। बस इसी अपनेपन की सोच और अपने भविष्य के कर्णधारों की मजबूती के लिए व्यक्ति जीवन भर घाणी (कोलू) के बैल की तरह गृहस्थी के कार्यों में उलझा रहता है। संतान के सुख के खातिर अनैतिकता, बेईमानी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी आदि कई बुराईयों को भी जीवन व्यवहार में अपनाता है। किन्तु क्या मानव की यह अति मोह आसक्ति की सोच उचित है ? क्या वह आज कितना जो कुछ है कल भी वैसा ही रहेगा ? क्या यह निश्चित है इसीलिए ज्ञानियों ने कहा भी है कि-

पूत सपूत तो क्यों धन संचे ?
पूत कपूत तो क्यों धन संचे ??

अर्थात् सपूत और कपूत दोनों ही पुत्रों के लिये धन संचय की कहीं भी कोई भी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सपूत तो स्वयं ही अपनी बल-बुद्धि-विवेक और कर्मठता के बल पर समाज व्यवस्था में अपना वजूद और स्थान बना लेगा जबकि कपूत संतान हमारे मान-स्वाभिमान को गर्त में गिराने व रिद्धि-सिद्ध को धूल में मिलाने में कहीं कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे।

अतः यदि एक अच्छे माता-पिता (अभिभावक) होने के नाते हम अपने संतान का हित चाहते हैं तो हम उसके जीवन विकास और सुख के लिए रुपया-पैसा, दौलत-शौहरत, यश-वैभव की खोखली मानसिकता त्याग दें। हम अपनी संतान के उज्जवल भविष्य के लिए उसकी संगत, शिक्षा, जीवन व्यवहार, आदतों व कार्यो पर अधिक ध्यान दें, इनके सुधार और विकास के लिए अधिकाधिक प्रयास करें तो हर घर में संतान महावीरस्वामी, गांधी, विवेकानंद का रुप प्राप्त कर सकती है।

किन्तु इसे पीड़ा जनक विडम्बना ही कहा जायेगा कि हर माता-पिता अपने बच्चे को बड़े से बड़ा डॉक्टर, इंजिनियर, प्रोफेसर बनाना चाहते है किन्तु एक आदर्श साधारण नैतिक नागरिक बनाने की कहीं किसी अभिभावक को चाह नहीं है। यही कारण है कि हमारी असली पूंजी अपनी संतान के दिलों दिमाग में भौतिकता हावी है, उसके जीवन व्यवहार में सद्संस्कारों का अभाव है। ऐसी परिस्थितियों में हमारी संतान बुरी संगत, बुरी आदतों और बुराईयों को अपनाते हुए पतन की राह पर आगे बढ़ रही है। वस्तुतः हमारा भविष्य वर्तमान में ही कमजोर हो रहा है। जो कि कष्टप्रद घटना है।

अतः अपने लिए ना सही अपनी संतान के लिए हम अपने चिंतन मनन को बढ़ाये व अपनी प्रवृत्तियों पर चिंतन मनन करें क्योंकि यदि हम आज अनैतिकता और आपराधिक काम करते है तो कल हमारी संतान भी हमारे उन्हीं कामों को आगे बढ़ाने के लिये कमर कसकर तैयार होगी। यही कारण है कि एक चोर का बेटा चोर, तस्कर का बेटा तस्कर और खूनी का बेटा दादा और क्रीमनल बन रहा है। क्या हमने जीवन भर भाग-दौड़ इसीलिए की कि हमारी संतान ऐसे क्रूर, घृणास्पद स्थान को प्राप्त करें ? आखिर हम चाहते क्या है ? अतः प्रत्येक अभिभावक पहले स्वयं के आचार विचार में परिवर्तन करें, अपने जीवन को व्यवस्थित व्यावहारिक, प्रामाणिक और नैतिक बनाये तभी हमारी संतान आदर्श रुप प्राप्त कर सकती है। एक अच्छे अभिभावक होने के नाते हम यह प्रयास अवश्य करें कि हम से जीवन में जो गलतियां हो गई है उनकी पुनरावृत्ति हमारी संतान नहीं करें। इसलिए प्रत्येक घर-परिवार में अभिभावक अपने बच्चों को अधिकाधिक समय दें। उनसे ज्ञान चर्चा, शंका-समाधान करें। संत-सतियों व प्रबुद्ध लोगों की संगत से उन्हें जोड़े तथा जीवन-व्यक्तित्व विकास के लिए पूरा-पूरा अवसर उन्हें दिया जाय। तो निश्चित ही हमारी संतान स्वयं अपने बल बुद्धि विवेक से समाज में अपनी पृथक और आदर्श पहचान बना सकती है जो कि अत्याधिक आवश्यक है वस्तुतः सद् संस्कार ही परम धन है....

हमारी संतान आदर्श बने, त्यागी बने, ज्ञानी बनें,
सेवक बनें, नैतिक बनें, जन-जन के लिए प्रेरणा बनें।
सद्संस्कारों के बल पर, हमारी संतान आदर्श बनें,
त्यागी बनें, ज्ञानी बनें, जन-जन के लिए प्रेरणा बनें॥

जो भाग्यशाली वर्षीतप नहीं कर सकते वो यह तो करें...!

वर्षीतप की आराधना श्रीआदिनाथ दादा के जन्म कल्याणक चैत्र वदी आठम को शुरु होती है। इस बार 2 अप्रेल को अष्टमी से तपस्या आरंभ हुई है। परमात्मा ने 400 उपवास करके करीबन 13 महीने तक ये वर्षीतप किया था। भगवान ने चिविहार उपवास से किया था और आखातीज को इक्षुरस से पारणा किया। अब हमारी शक्ति ऐसी नहीं है तो हम वर्षीतप एक उपवास और एक बियासना से करते है, अब हर कोई भाग्यशाली वर्षीतप नहीं कर सकता तो वो क्या करें।

तो ज्ञानी भगवंत कहते है कि- बड़ा तप ना हो तो हम छोटे तप और त्याग से भी अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते हैं। तो वर्षीतप कैसे करें। हम उपवास नहीं कर सकते तो छोटा तप त्याग जैसे सामयिक से भी वर्षीतप झेल सकते हैं।

13 महीने तक लगातार सामायिक करना करीबन 400 सामयिक होगी और सामायिक का वर्षीतप होगा।

एक नवकार वाली माला रोज गिनकर 13 महीने तक गिनो तो नवकार वाली का वर्षीतप होगा।

एक वर्ष तक लगातार पूजा करो। दर्शन करो तो दर्शन और पूजा का वर्षीतप होगा।

एक वर्ष तक नवकारसी करो तो नवकारसी का वर्षीतप होगा।

एक वर्ष तक एक रुपए दान दो या रात्रि भोजन नहीं करो।

जमींकंद का त्याग करो तो वो भी वर्षीतप है।

एक वर्ष तक किसी की निन्दा नहीं करो।

ब्रह्मचर्य का पालन करो, झूठ मत बोलो, क्रोध मत करो तो वो भी वर्षीतप है।

अगर कोई भूखा नहीं रह सकता तो ऐसे सिर्फ भूखे रहकर ही नहीं पर कई छोटे-मोटे तप त्याग वर्ष भर करके हम ये वर्षीतप की आराधना कर सकते है।

तो आईए कोई एक नियम या आराधना वर्षभर के लिये करे जो हमारा वर्षीतप बन जाए पुण्य लाभ प्राप्त करें।

वर्षीतप क्या है ?

✻ जैनों के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान ने लाखों वर्षो पूर्व यह तप किया था।

✻ 400 दिन तक भगवान ने तप किया था इसलिये इसे वर्षीतप कहते हैं।

✻ यह भगवान के द्वारा किया गया तप है उसकी परम्परा आज भी चल रही है।

✻ भगवान ने 400 दिन बाद श्रेयांसराजा के हाथों से गन्ने का रस से (पारणा) किया था- उपवास तोड़ा था।

✻ आज भी वर्षीतप के तपस्वी गन्ने के रस से पारणा करते है।

✻ प्रसिद्ध जैन तीर्थ पालीताना और हस्तिनापुर में तपस्वी पारणा करने जाते है।

✻ यह मान्यता है कि भगवान ने वर्षीतप का पारणा हस्तिनापुर में किया था।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

।। श्री परमात्माय नम: ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1

मो.: 09825414470 / 9820078772

स्थापना वि. सं. 1962

इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744

PAN : AAATS8024L

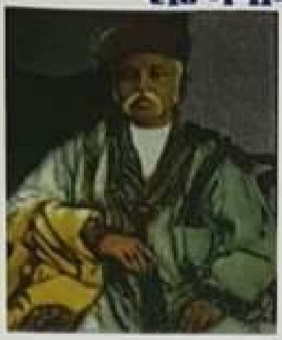

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वर्ग पहेली क्रमांक-348

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	■	4	5	6	
7		■	8	9	■	10		■
■		■	■	11	12	■	13	14
15			■	■	16			
	■	■	17			■	■	
18	19			■	■	20	21	
22		■	23	24	■	■		
■	25	26	■	27	28	■	29	30
31				■	32			

बाएं से दाएं:-

1- वैशाख सुदी दसमी केवलज्ञान कल्याणक दिवस है भगवान--- का (4)

4- श्री मणिभद्रवीर के तीन प्रमुख स्थानों में से एक---(4)

7- वीर प्रभु के दस प्रमुख श्रावकों में से एक का नाम है चु--- तक (2)

8- महावीर प्रभु के प्रमुख गणधार का नाम गौ--- (2)

10- किन्तु, परंतु का पर्यायवाची शब्द है---न (2)

11- नौ प्रति वासुदेव में से एक का नाम--- राज (2)

13- मंदिर में रहते हो भगवन---बाहर भी आया जाया करों,मैं रोज तेरे दर आता हूं,कभी तुम भी मेरे घर आया करों (2)

15- भ.सुविधिनाथजी की जन्मस्थली--- (3)

16- आशराज या अश्वराज के दो मंत्री पुत्रों में से एक का नाम है--- (4)

17- भ.महावीर को गौशालक द्वारा दिया हुआ कष्ट किसी की औषधि से दूर हुआ--- (3)

18- जैन धर्म के पांच तीर्थकर एवं श्री रामलला की जन्म भूमि अयोध्या इस राज्य में है उत्त--- (1,3)

20- अक्षय--- वैशाख माह की वह तिथि है जिसका कभी क्षय नहीं होता (3)

22- भानपुरा (मंदसौर) में स्थित है पार्श्व प्रभु का भलवा--- र्थ (1,1)

23- ज्योतिष की बारह राशियों में से अंतिम राशि--- (2)

25- लकड़ी पर चित्र उकरने की कला कहलाती है का---ला (1,1)

27- भ.अभिनंदनस्वामी के पिता का नाम सं--- (2)

29- श्री माणिभद्रवीर तपागच्छ के अधिष्ठाय -- व (1,1)

वर्ग पहेली क्रमांक-347 का परिणाम

न	व	नि	ध	■	अ	र	विं	द
व	र	■	न	र	■	का	म	■
■	दा	■	■	स	ओ	■	ला	दे
जि	न	न्द्रा	■	■	सि	द्धा	च	ल
न	■	■	वी	ज	या	■	■	द
व	र	का	णा	■	■	वा	न	र
र	त्न	■	वा	मा	■	■	व	■
■	पु	जा	■	मा	घ	■	का	वा
वी	र	प	ल्ली	■	णी	ह	र	■

31- पश्चिम बंगाल में भागीरथी के तट पर बसा चिंतामणि पार्श्व प्रभु का तीर्थ--- ज (4)

32- भ.महावीर के ससुर का नाम--- र (4)

ऊपर से नीचे:-

2- वीर प्रभु के दस प्रमुख श्रावकों में से एक म--- (4)

3- मेरा भा---महान (2)

5- सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल मधुर ध्वनि सुरनर सुणे, तेणे--- तिलक अमुल (2)

6- उज्जैन के निकट हासामपुरा में विराजित श्री ---र्श्वनाथ (3,1)

9- मध्यप्रदेश का संक्षिप्त नाम---(2)

12- सोलह सतियों में से एक प्र--- (3)

14- गुजरात के भीलड़ी में बिराजे है श्री---पार्श्वनाथजी (4)

15- यहां चार मंजिला मंदिर में बिराजे है श्री स्वयभू पार्श्वनाथजी--- (4)

17- पूजा के लिये सूती या--- वस्त्र पहन सकते है (3)

19- भ.सुपार्श्वनाथजी के पिता का नाम--- (4)

21- वर्तमान चोवीसी के अंतिम--- है भ.महावीर (4)

24- समरो मंत्र भलो---कार, ऐ छे चौदह पूरब नो सार एनी महिमा नो नहीं पार, एनो अर्थ अनंत अपार (2)

26- भगवान नमिनाथजी का लांछन है--- ल (2)

28- तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पा--- प्यारा, मेटो मेटो जी संकट हमारा (2)

30- अश्वसेन के राज दुलारे, वामा--- के सुत प्राण प्यारे (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-347

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न- किसमें कौन श्रेष्ठ है !

1- ब्रह्मचारी में। 2- सतीओं में। 3- गुणों में। 4- तारायें। 5- रुपवान में। 6- रुपवती में। 7- नदी में। 8- वृक्ष में। 9- हाथिओं में। 10-वाजिंत्र में। 11-न्याय में। 12-सम्यक्त्व में।

✻ एक लकड़्हारा जंगल से लकड़ी काटकर किसी प्रकार दुःख और कष्टसहते हुए अपने दिन व्यतीत करता था। एक दिन वह जंगल में पतली-पतली लकड़ी सिर पर ला रहा था कि अकस्मात कोई मनुष्य उसी रास्ते में जाते-जाते उसे पुकार कर बोला- ''बच्चो आगे बढ़ जा।'' दूसरे दिन वह लकड़्हारा उस मनुष्य की बात याद कर कुछ दूर आगे बढ़ा तो मोटी-मोटी लकड़्यिों का जंगल उसको दिख पड़ा। उस दिन उससे जहां तक बना, लकड़ी काट लाया और बाजार में बेचकर उसके पहले दिन से अधिक पैसा कमाया। तीसरे दिन फिर मन में विचार करने लगा- ''उस महात्मा ने तो मुझे आगे बढ़ जाने को कहा था। भला आज और थोड़ा आगे बढ़कर देखूं।'' यह सोचकर वह आगे बढ़गया और उसे एक चंदन को वन दिखाई पड़ा। उस दिन उसने चंदन की लकड़ी बेचकर बहुत रुपये कमाए। दूसरे दिन उसने फिर मन में विचार किया कि मुझे तो उन्होंने आगे ही जाने को कहा है, यह विचार कर उसे जाकर दिन उसने तांबे की खान पाई। वह यहीं पर न रुककर प्रतिदिन आगे ही बढ़ता गया और क्रमशः चांदी, सोने और हीरे की खान पाकर बड़ा धनवान हो गया। धर्ममार्ग में भी इसी प्रकार होता है।

आत्मिक क्षेत्र से आदमी को कभी भी रुकना नहीं चाहिये। उस साधु ने जो आगे बढ़ने की शिक्षा दी थी, उसका मर्म था- रुक मत, चलता जा, जब तक गंतव्य तक न पहुंच जाए। अपने अंदर झांक व तब तक आत्मावलोकन-विश्लेषण-मनन कर, जब तक प्रगति की राह न दिखाई पड़े। थोड़ी-बहुत ज्योति आदि का दर्शन कर यह मत समझो कि तुम्हें सिद्धि मिल गई, मोक्ष प्राप्त हो गया। इस संबंध में संत का कथन सही है-

कस्तुरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे वन मांहि।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नांहि॥
तेरा साईं तुझी में, पुहुपन में है वास।
कस्तूरी का हिरण ज्यों, फिर-फिर ढूंढता घास॥

आत्मावलंबी, किसी अनुग्रह-वरदान की प्रतीक्षा नहीं करते-न ही याचना, वरन प्रगति का पथ स्वयं बनाते हैं, अपनी सहायता आप करते हैं।

वर्ग पहेली क्रमांक-346 के परिणाम

विजेताः-

1- भारती जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय
3- श्रीमती कुसुम गौतम जैन, आगर(म.प्र.)- तृतीय

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-346 के परिणाम

विजेताः-

1- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीमती सुधा जैन, उज्जैन (म.प्र.) - द्वितीय
3- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1- भादवा सुदी-चौथ, 2- कार्तिक सुदी-पंचमी, 3- मागशर सुदी-एकादशी, 4- चैत्र वदि-अष्टमी, 5- वैशाख सदी-तीज, 6- वैशाख सुदि-ग्यारस, 7- ज्येष्ठ वदी-छट्ठ, 8- फाल्गुन सुदी-तेरस, 9- भादवा सुदी-एकम, 10-भाद्रपद सुदी-आठम, 11-माघ वदी-तेरस 12- कार्तिक सुदी-एकम।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-5-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा प्रबोधक जैनाचार्यश्री नेपाल में शासन पभावना कर जयपुर चार्तुमास के लिये विहार करेंगें

यह गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरी महाराज का सम्मान देने जैसा निर्णय है।

* 400 वर्ष प्राचीन भौमियाजी मंदिरजी सम्मेदशिखरजी ध्वजदण्ड-कलश प्रतिष्ठा में देशभर भौमियाजी भगत का आगमन हुआ।

* पूज्यश्री का 52 वां जन्म दिन श्री महावीर जन्म कल्याणक के दिन 21 अप्रेल को मनाया गया।

* श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ में 600 ओली आराधकों ने चैत्र नवपद ओली आराधना की

* नेपाल बाद विहार के क्षेत्र में जोरदार शासन प्रभावना करते हुए चार्तुमास के लिये जयपुर की ओर प्रस्थान किया।

* मुनिश्री उदयरत्नसागरजी एवं मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा.पालीताना में चार्तुमास करेंगे।

श्री सम्मेद शिखरजी में 400 वर्षो बाद प्रतिष्ठा हुई	18 अप्रेल को क्षेत्रपाल पूजन सामूहिक श्री सिद्धचक्र महापूजन	19 अप्रेल को श्री नवग्रह-पाटला दस दिक्रपाल पूजन 18 अभिषेक श्री पार्श्व भोमियाजी महापूजन
सम्मेद शिखर चैत्र ओली हुई	21 अप्रेल को प्रतिष्ठा श्री लघु शांति महापूजन	22 अप्रेल को द्वारोद्घाटन सत्तरभेदी पूजन

पूज्यश्री का 52 वां जन्मोत्सव सम्मेद शिखर में 21 अप्रेल को मनाया गया

❋ मालवा में अंजन प्रतिष्ठा के साथ श्री वीर प्रभु के श्रमण समुदाय को वृद्धिवान बनाकर विश्वरत्न नाम को सार्थक किया। सागर समुदाय को दीर्घकाल तक के लिये समर्थ बनाया। अल्प समय में चार बाल मुनियों की भगवती प्रवज्या का संयोग बना- नवरत्न गुरुकुल को श्रमण से समर्थ किया।

❋ श्री शिखरजी में अप्रेल का महिना यादगार बना, 20 अप्रेल को ऐतिहासिक वरघोड़ा तथा भोमियाजी का हवन हुआ, 21 अप्रेल को ध्वजदण्ड कलश की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

उज्जैन- संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी के 18 फरवरी को देहत्याग देने के बाद यह निश्चित हो गया था कि सुविशाल सागर समुदाय के आगामी गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा होंगे।पूज्यश्री को गणनायक पद पर विराजमान करने के लिये 22फरवरी को श्री आदिनाथ सोसायटी में पदवी प्रदान महोत्सव आयोजित किया गया। । इसके तुरन्त बाद आपश्री का पूना के विभिन्न संघों, बहुमान होने के बाद मुंबई की ओर विहार हुआ, वहां भी अनेक श्री संघों सत्कार सम्मान चल ही रहा है। इसी बीच **पूज्यश्री ने सागर समुदाय को मजबूती प्रदान करने के लिये महत्वपूर्ण निर्णय लेना आरंभ कर दिये है। सागर समुदाय की प्रवर श्रमण समिति का पुर्नगठन करते हुए पूज्यपाद युवा जैनाचार्यश्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा को सागर समुदाय की श्रमण प्रवर समिति में सम्मिलित करते हुए पूज्यश्री की योग्यता को उचित सम्मान दिया गया। सभी गुरु भक्तों ने आपश्री की इस उपलब्धि पर इसे पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के प्रति दिये गये सम्मान के रुप में देखा जा रहा है।**

श्री सम्मेद शिखरजी महातीर्थ की ओर प्रयाण करते हुए मार्ग में आने वाले श्री संघों में अनेक शासन प्रभावना के कार्य आपश्री ने सम्पन्न किये। **इधर पूज्यश्री के सुशिष्य मुनिश्री उदय रत्नसागर और उत्तमरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री नवरत्न धाम पालीताना में घोषित हुआ है।** मुनिश्री तीर्थरत्नसागरजी म.सा. वर्षीतप पारणा तक पालीताना में ही विराजित है। मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी आपश्रीजी के साथ श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा में साथ ही है।जिन शासन की अद्भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है वह उसकी तुलना में करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्यश्री का पुण्यबल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। सुवासरा में संयम बालमुनि बने श्री सिद्ध ऋषिरत्न सागरजी म.सा. और सैलाना में दिव्यांश से बालमुनि बने श्री देवर्धिरत्नसागर म.सा. से जितना नवरत्न गुरुकुल श्रमण समर्थ बना है उतना ही सागर समुदाय श्रमण प्रधान बना है। यह सब कुछ पूज्य जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा की पुण्य समृद्धि है। क्रियाशील जैनाचार्य मालवा के आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा अपने प्रभाव पुण्य और पवित्राता से शासन प्रभावक कार्य से यादगार मिसाल बनते जा रहे हैं। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठधर्मिष्ठों को आकृषित

कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने डंका बजा दिया है। श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी गुरुकुल से निरतंर जुड रहे है । 35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता की पूज्यश्री से आग्रहभरी विनंती पर विश्वविख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को आपकी निश्रा में हुई है 15 से 23 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन भी हुआ । श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न कर आपश्री ने नेपाल देश में शासन प्रभावना करते हुवे राजस्थान जयपुर में चार्तुमास के लिये विहार किया है।

नव्वांणु यात्रा-विद्यादेवी उपासना

नाकोड़ा- श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ में सागर समुदाय के वर्धमान तपोनिष्ठ आचार्यदेव श्री नयचंद्रसागर सूरीजी महाराज के शिष्यरत्न मुनिश्री सुमतिचंद्रसागरजी एवं मुनिश्री शीतल चंद्रसागरजी म.सा. की निश्रा में नव्वांणु यात्रा के साथ विद्यादेवी उपासना का आयोजन शिविर के माध्यम से किया जायेगा। दिनांक 12 से 26 मई तक आयोजित शिविर उवसग्गहरं आराधक परिवार, बालोतरा के द्वारा लगाया जा रहा है। 15 दिवसीय शिविर में 12 से 25 वर्ष के बालकों को सम्मिलित किया जायेगा।

11 साल की बेटी के साथ साध्वीजी बनी, दीक्षा के लिये एक लाख रुपये की नौकरी छोड़ी

प्रतापगढ़- भगवान की भक्ति में ऐसा मन लगा कि माँ-बेटी एक साथ सांसारिक जीवन का त्याग करने जा रही है । एक लाख रुपये महीने की नौकरी छोड़कर एक सरकारी टीचर अपनी बेटी के साथ दीक्षा लेंगी। बेटी ने सांसारिक जीवन त्यागने के बारे में जब परिवार से बात की तो उन्होंने उम्र का हवाला देते हुए मना कर दिया। इसके बाद माँ-बेटी दोनों ने भक्ति मार्ग पर चलने के इरादे को देखते हुए परिवार तैयार हो गया है। अब 40 साल की प्रीति बेन अपनी 11 साल की बेटी सारा के 21 अप्रेल को दीक्षा ग्रहण की पर्वधरत्ना एवं गीतर्थ श्रीजी नाम रखा गया, छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़) पर यह दीक्षा कार्यक्रम हुआ। 21 अप्रेल को दीक्षा दीक्षा समारोह में अपने गुरु सौम्या रत्ना श्रीजी और पुनीतरसा श्रीजी की शिष्या बनी। सकल जैन श्रीसंघ के संतों के सानिध्य में यह दीक्षा हुई। प्रीति ने कठिन रास्तों की परवाह किए बिना संयम पथ पर आगे बढ़ने का निश्चय किया। सरकारी शिक्षिका की जॉब छोड़ने का उन्होंने निश्चय किया।

जीवन को सही दिशा देने का एक मात्र मार्ग दीक्षाः- छोटी सादड़ी में विराजित आचार्य श्री कुलबोधि सूरीश्वरजीकहाकि- हमारे दिशाहीन जीवन को सही दिशा देने का एक मात्र मार्ग दीक्षा है। दीक्षा संसार से विरक्त होकर संयम पथ पर चलने का.... सारे कर्मो को खपाकर मोक्ष मार्ग की तरफ बढ़ने का एक मात्र साधन है।

बेटी की दृढ़ता के आगे झुका परिवारः- बेटी सारा छोटी सादड़ी में ही जैन समाज की ओर से संचालित संस्कार पाठशाला में जाती थी। प्रवचनों से प्रभावित होकर करीब 15 दिन पहले बेटी ने घर में बताया कि सांसारिक जीवन को त्याग कर दीक्षा लेना चाहती हैं। दादा-दादी और माँ ने बेटी को कम उम्र का हवाला देकर खूब समझाया, लेकिन वो नहीं मानी । आखिरकार करीब 7 दिन बाद माँ-बेटी दोनों ने सांसारिक जीवन त्याग कर दीक्षा ग्रहण करने का फैसला किया।

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में चार्तुमास

नाकोड़ा- राष्ट्रसंत पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास का भव्य आयोजन होने जा रहा है। श्री नाकोड़ा दर्शन चार्तुमास 2024 के अंतर्गत चार्तुमास करनेवाले धर्मिष्ठों से फार्म भरवाये जा रहे हैं। सम्पर्क सूत्र-9821154051

कोढ़वा संघ में ओली आराधना

पूना- कोढ़वा संघ में पूज्यपाद मालव शिरोमणी आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश श्री विरागसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में शाश्वती चैत्र ओली का आयोजन किया गया। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक बड़ी संख्या में आराधकों ने आयंबिल तप किया। दिनांक 24 अप्रेल को पारणा के साथ तप की पूर्णाहुति हुई।

गिरनार में चार्तुमास

गिरनार- पूज्य अध्यात्मयोगी श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का आगामी सामूहिक चार्तुमास श्री गिरनार महातीर्थ में होने जा रहा है। सामूहिक रुप से 500 आराधक का चार्तुमास 50 दिवस का होगा।

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजयजी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्रकीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है। पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

राजगढ़ में चार्तुमास होगा

राजगढ़- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति पूज्य साध्वी श्री हेमेन्द्र श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्यश्री चारुव्रता श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्य नम्रवृता श्रीजी महाराज श्री मग्नवृता श्रीजी महाराज मीतवृता श्रीजी महाराज आदि ठाणा-3 का आगामी चार्तुमास राजगढ़ निर्धारित हुआ है।

आचार्य श्री महासेन सूरीजी का चार्तमास

प.पू. कविकुलकीरिट आ.श्री लब्धिसूरीजी म. के दिव्य साम्राज्य पू. शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेनसूरीजीआदि साध्वी विरतिपूर्णाश्री आदि ठाण का वि.सं. 2080 का चार्तुमास बैंगलोर-जयनगर संघ में जय बुलाई गई।

नूतन आचार्यश्री का चार्तुमास पूना में

पूना-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य नूतन आचार्य देवेश वैराग्यरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराज का 2024 का चार्तुमास पूना में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास सोमवार पेठ पूना में निश्चित हुआ है। आप अभी मुंबई में विराजमान है।

आ.श्री हंसरत्न विजय सूरीजी का चार्तुमास जोधपुर में

जोधपुर- जैन जगत में अनेक बड़ी तपस्या करनेवाले आचार्य भगवंत श्री हंसरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास जोधपुर में होने जा रहा है। दिनांक 17 मार्च को मुंबई के कांदिवली श्री संघ में जोधपुर से बड़ी संख्या में श्री संघ के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में जोधपुर चार्तुमास की जय बुलाई गई। जून माह में पूज्यश्री जोधपुर पधारेंगे इसके साथ ही जैन संत श्री विश्वरत्नविजयजी के साथ अनंक संत श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक रत्नप्रभ भवन में चार्तुमास करेंगे।

पालीताना में चार्तुमास

पालीताना- सनतर भवन पालीताना में 2024 का चार्तुमास होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री आनंद वर्धाना सूरीजी एवं श्री आत्मदर्शन सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास दिनांक 20 जुलाई से आरंभ होगा तथा समापन 8 सितंबर को होगा।

प्रतिष्ठाचार्य श्री जिनोत्तम सूरीजी म.सा. का चातुर्मास

आपका आगामी चार्तुमास श्री शिवगंज राज. के जैन श्वेतांबर उपाश्रय में होने की घोषणा हुई है।

राष्ट्रसंत का चार्तुमास श्री नाकोड़ा तीर्थ में

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ संत जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा के गुरुभक्तों का मिलन समारोह दिनांक 8 दिसंबर को चेम्बुर वेस्ट के श्री ऋषभदेव जैन मंदिर में आयोजित किया गया। श्री नाकोड़ा दर्शन परिवार ने आयोजित किया था। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ से निश्चित हुआ। आपश्री की निश्रा में मुंबई में चार प्रतिष्ठा महोत्सव होने के बाद आपश्री ने दिनांक 23 दिसंबर को राजस्थान की ओर विहार किया है। राजस्थान में आपश्री की निश्रा में पांच अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होनेवाले है। मुंबई में आपश्री के वरद हस्ते 136 अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हो चुके है।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

जोधपुर में चार्तुमास

जोधपुर- श्री भेरुबाग पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्यदेव श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी महाराज का आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। आपश्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य है।

शाश्वती चैत्र ओली आराधना गणिवर्य श्री आदर्श रत्नसागरजी म.सा.ने भोपावर महातीर्थ की

✻ चार्तुमास अहमदाबाद में।

उज्जैन- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में श्रीभोपावर महरतीर्थ शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक किया इसके पूर्व गणिवर्य श्री का इन्दौर प्रवास दिनांक 1 से 9 अप्रेल तक यहां विभिन्न श्री संघों में आपश्री ने शासन प्रभावना करते हुए दिनांक 9 अप्रेल को नववर्ष की महामांगलिक प्रदान की।

लडुना जिनमंदिर में ध्वजारोहण हुआ

लडुना- मंदसौर के समीप लडुना नगर में श्री आदिनाथ प्रभु के जिन मंदिर का ध्वजारोहण का आयोजन परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक दिवस 21 अप्रेल चैत्र सुदी-13 को किया गया। परमात्मा का भव्य वरघोड़ा आयोजित हुआ। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। ध्वजारोहण विजय मुर्हूत 12.39 बजे किया गया। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोज कुमार बाबूमलजी हरण का मार्गदर्शक प्रेरणा रही।

अध्यात्म योग शिविर

करादिया- कच्छ गुजरात के तीर्थ कटारिया में पूज्य आचार्य भगवंत श्री यशोविजय सूरीश्वरजी महाराजा की अमृत निश्रा में अध्यात्म योग शिविर का आयोजन किया जायेगा। दिनांक 22 से 25 मई तक आयोजन शिविर के लिये 10 मई तक आवेदन किया जा सकता है।

पंन्यास पदवी प्रदान की जायेगी

जलगांव-पद्मभूषण, राज प्रति बोधक पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसुंदर सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न सरल स्वभावी पू.आ. श्रीमद् विजय पद्मसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न पूज्य गणिवर्य श्री वात्सल्यसुंदर विजयजी म.सा. तथा पू. गणिवर्य श्री परार्थसुन्दर विजयजी म.सा. का पंन्यास पदवी प्रदान करने का भव्य आयोजन चैत्र सूद-7 सोमवार 15 अप्रेल को जलगांव में होने जा रहा है। पदवी प्रदान महोत्सव की तैयारी चल रही है।

श्री पार्श्वनाथ मंदिरजी का ध्वजारोहण होगा

चैन्नई- पुरुषारानीय पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर पुरुषबाक्कम में मंदिरजी की 31 वीं ध्वजारोहण का आयोजन किया जायेगा। दिनांक 28 जून को होने जा रहे आयोजन में प्रातः स्नात्र पूजन, सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई जायेगी उसके बाद ध्वजा शोभायात्रा वैद्य परिवार के निवास स्थान से मंदिरजी पहुंचेगी जहां ध्वजारोहण होगा।

श्री गिरीराज की 99 यात्रा शाश्वत परिवार के द्वारा

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री आनंद वर्धनसूरीजी महाराजा एवं आचार्य श्री आत्मदर्शनसूरीजी महाराज की निश्रा में दादा की 99 यात्रा का आयोजन दिनांक 27 अप्रेल से आरम्भ होगा। बिदाई बहुमान दिनांक 30 मई को होगा।

श्री नाकोड़ा तीर्थ में शिविर और 99 यात्रा होगी

नाकोड़ा तीर्थ- सागर समुदाय के आचार्यदेव श्री नयचंद्रसागर सूरीजी के सुशिष्य मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी, मुनि श्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा. की निश्रा में नवयुवकों के लिये 15 दिवसीय शिविर का आयोजन होने जा रहा है। इसके अंतर्गत 99 यात्रा का आयोजन 12 मई से 26 मई तक होगा। माल 26 मई को होगी। 99 यात्रा श्री नाकोड़ा तीर्थ में 500 सीढी के ऊपर बने जिनालय की होगी। आयोजक गजानो परिवार मालवाड़ा है।

आबु देववाड़ा में ध्वजारोहण होगा

देववाड़ा- सेठ श्री कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी के अंतर्गत श्री आबु देलवाड़ा के जिन मंदिर का ध्वजारोहण महोत्सव 8 से 10 जून तक त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ मनाया जायेगा। दिनांक 8 जून को मंदिरजी का शुद्धिकरण तथा दिनांक 9 जून विमल वसही जिनालय का 18 अभिषेक रात्रि भक्ति तथा आबु देववाड़ा पर विशिष्ट आयोजन होगा। 10 जून को ध्वजा रोहण तथा सत्तर भेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी।

श्री नागेश्वर तीर्थ में शिविर

नागेश्वर- विश्व विख्यात श्री नागेश्वर महातीर्थ में नवपद चैत्र ओली के बीच में पांच दिवसीय संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में शिविर दिनांक 15 से 19 अप्रेल तक आयोजित हुआ। साध्वीश्री मोक्षज्योतिश्रीजी, अर्चितगुणाश्रीजी एवं स्वर्णज्योति श्रीजी म.सा. का सानिध्य भी रहा।

मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी की निश्रा में 14 माह की कठोर तपस्या के बाद अक्षय तृतीया पर उज्जैन में 40 वर्षीतप आराधक पारणा करेंगें

✻ चार्तुमास प्रवेश इन्दौर में 14 जुलाई को होगा।

उज्जैन- गच्छाधिपति पूज्य पाद आचार्य देवेश वचनसिद्ध श्री नरदेव सागर सूरीजी महाराज की मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में विगत वर्ष श्री सिद्ध चक्राराधन तीर्थ पर 120 वर्षीतप आराधकों का सामुहिक वर्षीतप आरम्भ हुआ था। वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीय दिनांक 10 मई शुक्रवार को होगा। 40 आराधकों का पारणा महोत्सव आयोजन का शुभारंभ पंचान्हिका महोत्सव के साथ जैन तीर्थ हासाम पुरा एवं श्री सिद्ध चक्राराधन तीर्थ खाराकुंआ पर होगा जैन तीर्थ हासाम पुरा में 1 मई को श्री सिद्धाचल गिरिराज का मांत्रिक औषधी अभिषेक से आयोजन आरंभ होगा। यह आयोजन प्रातः 9.30 बजे से होगा एवं दिनांक 3 मई को छोटा सर्राफा में श्री शांतिनाथ मंदिर परिसर में 700 महिलाओं के द्वारा परमात्मा की भक्ति का आयोजन होगा जिसमें 15 जैन महिला मंडल भाग लेंगे।पूज्यपाद श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचल मुक्ति सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा के साथ साध्वीवर्या श्रीदमिताश्रीजी, श्रीशील रेखाश्रीजी श्रीचारुधर्मा श्री जी, श्रीसम्यगदर्शना श्री जी साध्वीवर्या श्रीमुक्तिरेखा श्री जी, आदि ठाणा-25 की वर्षीतप पारणा महोत्सव में मंगल उपस्थिति रहेगी। महोत्सव के अंतर्गत पूज्यश्री और साध्वीमंडल आदि ठाणा का मंगल प्रवेश दिनांक 7 मई को कांच के मंदिर से श्री ऋषभदेवजी छगनीराम पेढ़ी, खाराकुंआ पर होगा जहां सामायिक प्रवचन, प्रभावना होगी। दिनांक 8 मई को श्री सिद्ध गिरिराज का वधामणा एवं भावयात्रा पूज्यश्री की निश्रा में संगीत के साथ होगी। रात्रि भक्ति का आयोजन होगा। दिनांक 9 मई को प्रातः पूज्यश्री के प्रवचन होगें इसके बाद दोपहर में12.39 बजे विजय मुर्हूत में श्री सिद्धचक्र महापूजन होगी। रात्रि में 8 बजे से श्री अवंति पार्श्वनाथ मंदिरजी परिसर में मुंबई के संगीतकार श्री प्रतीक गेमावत की परमात्म भक्ति का भव्य आयोजन होगा। परमात्मा की भव्य अंगरचना और जिन मंदिर को फूलों से सजाया जायेगा। दिनांक 10 मई को श्री अलौकिक पार्श्वनाथ महातीर्थ के पास आंख के अस्पताल से वर्षीतप आराधकों का भव्य वरघोड़े का आयोजन पूज्यश्री और साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में किया जायेगा। श्री अलौकिक पार्श्वनाथ तीर्थ परिसर में पूज्यश्री की निश्रा में पच्चखाण के बाद श्री श्रेयांस राजा के द्वारा स्वर्ण कलश से सभी आराधकों को गन्ने के रस से पारणा करवाया जावेगा। साधर्मिक भक्ति का आयोजन होगा।

महोत्सव के लिये अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा। सांसद श्री अनिल फिरोजिया, विधायक श्री अनिल कालूहेड़ा तथा विधायक श्री महेश परमार,पूर्व विधायक श्री पारस जैन को भी आमंत्रित किया गया है। पारणा महोत्सव के लिये तैयारियां चल रही है। पारणा महोत्सव समिति के संयोजक सचिव डॉ. सुभाष जैन आगमोध्दारक है अध्यक्ष शेखर कोचर एवं उपाध्यक्ष ललित बाफना है

इसके स ाथ ही आपश्री की अमृत निश्रामेंश्री अभ्युदयपुरम् तीर्थ में उपधान तप दिनांक 14 अप्रेल 2024 को प्रथम तथा दिनांक 16 अप्रेल को द्वितीय प्रवेश के ा साथ आरंभ हुआ। उपधान तप का वरघोड़ा 1 जून को आयोजित होगा। मालारोपण विधान दिनांक 2 जून को सम्पन्न होगा। आपका आगामी चार्तुमास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है चार्तुमासिक प्रवेश 14 जुलाई को होगा।

श्री गिरनार में चार्तुमास एवं उपधान तप

गिरनार- श्री गिरनार महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनेशरत्न सूरीश्वरजी महाराजा का चार्तुमास गिरनार दर्शन धर्मशाला में होने जा रहा है। चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी 13, दिनांक 19 जुलाई को होगा। चार्तुमास का आरंभ आषाढ़ सुदी-14, 20 जुलाई से होगा। महापर्व आराधना दिनांक 31 अगस्त से 7 सितंबर तक होगी। उपधान तप का प्रथम मुर्हूत दिनांक 13 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश 15 अक्टूबर को होगा। तपस्वियों की शोभायात्रा 29 नवंबर को तथा माल परिधान 30 नवंबर को होगा। आयोजक गांधी परिवार है।

200 करोड़ की संपत्ति की दान, सुख-सुविधा छोड़ वैराग्य लेंगे कारोबारी पति-पत्नी

दिल्ली- गुजरात के साबरकांठा के हिम्मतनगर के रहने वाले व्यापारी भावेश भाई भंडारी और पत्नी ने अपनी 200 करोड़ की संपत्ति दान कर वैराग्य लेने का फैसला किया है। भावेश बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन व्यवसाय से जुड़े हुए है। उनका घर साबरकांठा से अहमदाबाद में फैला हुआ है। अब उन्होंने ऐशो-आराम की जिंदगी त्यागकर जैन धर्म में लेने और वैराग्य जीवन जीने का फैसला किया है। भावेश और उनकी पत्नी सहित 35 लोग 22 अप्रेल को अहमदाबाद रिवर फ्रंट पर संयमित जीवन जीने का संकल्प लिया। भंडारी परिवार का हमेशा से जैन समाज की ओर झुकाव रहा है। वैराग्य लेने के बाद भावेश व उनकी पत्नी जैन साधु के रुप में जीवन जीयेंगे। उनको पंखा, एसी मोबाईल फोन जैसी सुविधाएं त्यागनी पड़ेगी। उन्हें पैदल ही यात्रा करनी होगी।

दान की संपत्तिः- भावेश और उनकी पत्नी हिम्मतनगर में धूमधाम से 5 किलोमीटर लंबी शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में भावेश ने अपनी 200 करोड़ की संपत्ति दान में दे दी।

बच्चों से मिली प्रेरणाः- भावेश व उनकी पत्नी से उनके बेटा और बेटी भी संयमित जीवन जीना शुरु कर चुके हैं। भावेश के 16 वर्ष के बेटे और 19 साल की बेटी ने दो साल पहले ही दीक्षा ली थी।

इन्दौर रेसकोर्स में ओली आराधना

इन्दौर- श्री आगमोद्धारक आराधना भवन रेसकोर्स रोड़ पर चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन किया गया। पूज्य मुनिराजश्री ऋषभ चन्द्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक ओली आराधना हुई। आयंबिल आराधकों का पारणा 24 अप्रेल को सम्पन्न हुआ।

जैनाचार्यश्री कुलबोधि सूरीजी के प्रवचन

प्रतापगढ़- पूज्य आचार्यदेवेश श्री कुलबोधि सूरीश्वरजी महाराज का आगमन प्रतापगढ़ में हुआ। यहां दिनांक 7 से 11 अप्रेल तक पंच दिवसीय प्रवचन उत्सव का आयोजन किया गया।

श्री शंखेश्वरपूरम् तीर्थ में ओली आराधना

साकड़ा - पश्चिम बंगाल के पुरालिया जिले में स्थित श्री शंखेश्वर-पुरम् तीर्थ शाश्वती चैत्र नवपद ओलीजी की आराधना का आयोजन पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री मुक्तिप्रभसूरीजी महाराजा एवं आचार्य देव श्री विनीतप्रभसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक किया गया।आयंबिल आराधकों का पारणा 24 अप्रेल को सम्पन्न हुआ। लाभार्थी श्री भरत पुख राजजी चैन्नई थे।

✻ पांच प्रकार के निधान ?

:-1- पुत्र निधान, 2- विज्ञान निधान, 3- धान्य निधान, 4- मित्र निधान, 5- धन निधान।

गुलबर्गा से अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव

कलबुर्गा- कर्नाटक केइस नगर से परम तारक श्री सुमतिनाथ परमात्मा आदि जिनबिम्बों की भव्य अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन पूज्य आचार्यश्री महेन्द्रसागरसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में किया गया। शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा से दिनांक 12 अप्रेल से आरम्भ महोत्सव में दीक्षा कल्याणक का वरघोड़ा 14 अप्रेल को आयोजित हुआ। प्रतिष्ठा 15 अप्रेल को सम्पन्न हुई। अष्ट्रोत्तरी शांतिस्नात्र का आयोजन किया गया। महोत्सव की पूर्णाहुति 16 अप्रेल को द्वारोद्घाटन के साथ हुई।

सूरत में अंतरिक्षा पार्श्वनाथ मंदिर

सूरत- पालके आर.एन.जी. एवेन्यू में श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु के जिन मंदिर के लिये शिलान्यास का आयोजन पूज्य जैनाचार्य श्री सागरचंद्र सागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में हुआ। दिनांक 13 अप्रेल को शिलान्यास के चढ़ावे बोले गये एवं दिनांक 16 अप्रेल को मंदिरजी का शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

आयड़ तीर्थ में ओली आराधना

उदयपुर- तपागच्छ संघ उद्गम स्थली आयड़ तीर्थ में शाश्वती चैत्र ओली की आराधना का आयोजन पूज्यपाद आचार्यदेवश्री परमभूषणरत्न सूरीश्वरजी, पंन्यास ऋषभरत्न विजयजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में किया गया। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक आयोजित आयंबिल ओली आराधना के अंतर्गतआयंबिल आराधकों का पारणा 24 अप्रेल को सम्पन्न हुआ।

अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक की प्रेरणा से जहाज मंदिर की प्रतिष्ठ बंधु त्रिपुटी मुनिश्री की निश्रा में हुई

✲ चार्तुमास हेतु गदक कर्नाटक की ओर विहार होगा।

सीतामऊ- सीतामऊ-जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में मालवा राजस्थान में प्रतिष्ठा की बाहर आई हुई है। सुखेड़ा में 4 अप्रेल, गौतमपुरा में 15 अप्रेल, सीतामऊ जहाज मंदिर में 26 अप्रेल तथा सीतामऊ के गांव मंदिर में 28 अप्रेल को प्रतिष्ठा आयोजन सम्पन्न हौंगे। इस हेतु अंतराष्ट्रीय जैन विधि कारक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा से श्री सिद्धाचलधाम प्रतिष्ठा जाजम 4 मार्च को तथा दिनांक 16 मार्च को श्री केशरिया आदिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा हेतु जाजम हुई। सभी चढ़ावे अच्छे हुए। अप्रेल माह की प्रतिष्ठा के बाद **मुनि भगवंतों का यहां से गदक कर्नाटक की ओर आपका विहार होगा जहां आपका आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है।**

झारड़ा में 17 साल बाद चार्तुमास

झारड़ा- झारड़ा में प्रथम चार्तुमास प.पू.साध्वी सौम्ययशा श्रीजी आदि ठाणा का वर्ष 2000 में हुआ था उसके बाद 2002, 2006 में प.पू.साध्वी अर्चपूर्णा श्रीजी आदि ठाणा का हुआ था। झारड़ा में प.पू.आचार्य भगवंत नवरत्नसागरजी म.सा. के आर्शीवाद से प.पू. आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्न सागरजी म.सा. की निश्रा में चौमुखा महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा वर्ष 2022 में सम्पन्न हुई। झारड़ा में 23 वर्ष बाद प.पू.साध्वी अर्चिताश्रीजी और आनंदिताश्रीजी म.सा. का चार्तुमास गच्छाधिपति श्री नरदेवसूरीजी की आज्ञा से प.पू.आचार्य श्री जितरत्न सागरजी, चन्द्ररत्नसागरजी म.सा. ने झारड़ा श्रीसंघ की विनंती पर मोहन बड़ोदिया में दीक्षा महोत्सव में झारड़ा में प.पू.साध्वी अर्चिताश्रीजी और आनंदिताश्रीजी म.सा. का 2024 का चार्तुमास कराए जाने आज्ञा प्रदान की। झारड़ा जैन श्री संघ में खूशी की लहर दौड़ गई।

साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी का चार्तुमास

पाली- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या रही तपस्वी साध्वी कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पाली के गुजराती जैन आराधना भवन में होगा। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है।यहां पर पूज्य मुनिराज श्रीसुमतिचन्द्रसागरजी म.सा. का श्री चार्तुमास होने जा रहा है।

लक्ष्यवेध उपधान तप

चैन्नई- पूज्य आचार्य देवेश श्री अभयशेखर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में वाराही मंडण श्री शांतिनाथ प्रभु की छत्रछाया में उपधान तप का आयोजन कोलाट हित के दक्षिण भारत में प्रथम बार होने जा रहा है। उपधान में प्रथम प्रवेश दिनांक 16 अप्रेल को होगा। उपधान मोक्षमाल दिनांक 5 जून को होगी।

श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसंयमबोधि सूरीजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 15 अप्रेल 2024 सोमवार से आरंभ होगी। लाभार्थी हंसा बहन मुलाणी परिवार है।

दयालकिला से नव्वांणु यात्रा

कांकरोली- श्री ऋषभदेव भगवान की पेढ़ी कांकरोली में दयाल शाह किला से नव्वांणु यात्रा का आयोजन दिनांक 19 मई से 9 जून तक होने जा रहा है। पूज्य आचार्यदेव श्री निपुणरत्नसागर सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यह आयोजन होगा। रोज पांच यात्रा करने के लिये सिर्फ 250 सीढ़ियां की चढ़ाई करना है। गर्मी में अपने छोटे बच्चों के साथ तीर्थ और प्रकृति का आनन्द लेने का यह स्वर्णिम अवसर है।

ठाकुरद्वार जैन संघ में सागर गच्छाधिपति की निश्रा में शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना हुई

मुंबई- ठाकुरद्वार जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ में सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध आचार्य देवेश श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा के साथ उपाध्याय श्री विनीत सागरजी म.सा.वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. ओजस्वी वक्ता मुनिराज श्री विनम्र सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी महाराज की निश्रा में शाश्वती चैत्र ओली आराधना का आयोजन किया गया। दिनांक 15 से 23 अप्रेल के मध्य सम्पन्न आयंबिल आराधना का लाभ अलग-अलग लाभार्थियों के द्वारा लिया गया। दिनांक 24 अप्रेल को सभी तपस्वी का पारणा सम्पन्न हुआ।

श्री नाकोड़ा तीर्थ में शिविर का आयोजन

नाकोड़ा-नाकोड़ा महातीर्थ में समर वेंकेशन में 15 दिवसीय युवा शिविर के आयोजन के साथ 99 यात्रा और विद्यादेवी उपासना अनुष्ठान का आयोजन होने जा रहा है। 99 यात्रा का आयोजन 12 मई से होगा तथा समापन दिनांक 26 मई को होगा। सागर समुदाय के मुनिश्री सुमतिचंदसागरजी एवं मुनिवर श्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा-9 की निश्रा में यह आयोजन होगा। जैन तत्वज्ञान, स्मरण शक्ति विकास, विद्यादेवी उपासना अनुष्ठान आदि आयोजन होंगे। गजानी परिवार मालवाड़ा मुख्य लाभार्थी है।

राजगढ़ में ओली आराधना

राजगढ़-पूज्यपाद आचार्य गुरुदेव मालव भूषण श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा की नगरी राजगढ़ में शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन पूज्य साध्वी श्री अर्चिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में किया गया। दिनांक 15 से 23 अप्रेल के मध्य सम्पन्न आराधना का पारणा 24 अप्रेल को सम्पन्न हुआ।

डेहलावाला गच्छाधिपति पर गुणानुवाद सभा हुई

सूरत- गुरु पावन भूमि अड़ाजण सूरत में पूज्यपाद आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्री राम सूरीश्वरजी महाराज की 19 वीं पुण्यतिथि पर भव्य गुणानुवाद सभा, सामुहिक आयंबिल, सामयिक का आयोजन किया गया। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री विजय हेमप्रभुसूरीजी, आचार्य देव श्री विजय अभयदेव सूरीजी के सुशिष्य गणिवर्य श्री योगरत्न विजयजी आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 3 अप्रेल को आयोजित धर्मसभा में गुणानुवाद सभा हुई। संवेदना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सागवाड़ा में शक्रस्तव अभिषेक

सागवाड़ा- राजस्थान के इस नगर में पूज्यपाद आचार्यदेवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया। दिनांक 13 अप्रेल को प्रवेश के बाद 14 अप्रेल को यह भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

संयम जीवन स्वीकार का पराकर्म

मुंबई- वर्धमान संस्कारधाम मुलुंड एवं श्री सिमंधर जिन भक्ति मंडल से जुड़ेहुए मुमुक्षु आत्मन् परमात्मा श्री प्रभुवीर के शासन की श्रमण परम्परा को आगे बढ़ाने के लिये तत्पर बने है। श्री जिगरभाई-श्रीमती किरण बहन एवं ध्वनि बहन जिनका विवाह 38 वर्ष पूर्व ही हुआ है। दिनांक 6 जून को सूरत में दीक्षित होने जा रहे है साथ ही बाल मुमुक्षु जिनयभाई की दीक्षा 24 जून को भुज में होने जा रही है। आगमोद्धारक परिवार को बहुत-बहुत अनुमोदना।

भायंदर में उपधान तप

मुंबई- श्री पार्श्वप्रेम श्वेतांबर मूर्ति पूजक तपागच्छ संघ भायंदर वेस्ट के श्री सीमंधर स्वामी जिनालय परिसर में उपधान तप होने जा रहा है। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री देवर्यकवल्लभ विजयजी म.सा. गणिवर्य आदि ठाणा की निश्रा में होने जा रहे उपधान तप में 12 से 45 वर्ष के आराधक सम्मिलित हो सकेंगे। अठारिया में प्रवेश 1 मई को तथा द्वितीय प्रवेश 3 मई को होगा। उपधान तप की माल 2 जून को होगी।

सेमलियाजी में ध्वजारोहण

सेमलिया- श्री शांतिनाथ परमात्मा के लगभग 23 सौ वर्ष प्राचीन जैन तीर्थ सेमलियाजी में परमात्मा श्री प्रभुवीर के जन्म कल्याणक के लिये याने चैत्र सुदि-13 दिनांक 21 अप्रेल को ध्वजारोहण किया गया। यहां सागर समुदाय के पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के गुरुदेव मुनिपुंग श्री झवेरसागरजी महाराजा की प्रतिमा विराजमान है। ध्वजारोहण पर संघ स्वामी वात्सल्य पूजन आदि के आयोजन हुए।

वागड़ नरेश न देवी-देवता की मूर्तियां प्रतिष्ठित करवाई

✻ चार्तुमास श्री सिद्धगिरीराज की छत्राछाया में होगा।

मोटागांव- मोटागांव के श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिर परिसर में नवनिर्मित श्री नाकोड़ा भैरव जैन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा पंचान्हिका महोत्सव 18 से 22 अप्रेल तक मनाया गया। नवनिर्मित नाकोड़ा भैरव मंदिर में श्री नाकोड़ा भैरवदेव, माँ लक्ष्मीदेवी, माँ सरस्वती देवी की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को हुई। इस महोत्सव में आचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी, मोक्षरत्नसागरजी, मुनि रत्नसागरजी, पवित्रासागरजी, पद्म रत्न सागरजी, वागड़सम्राट उपाध्याय पीयूषविजयजी, साध्वी सुधासना श्रीजी, मुदिताश्रीजी, मुक्तिनिलिया श्री जी, शीलपद्मा श्रीजी, भक्तिनिलया श्रीजी, विपुलप्रज्ञा, प्रियवर्षा श्रीजी, मोटागांव की साध्वी मोक्षवर्षा श्रीजी की पावन निश्रा में रही। पांच दिवसीय महोत्सव के लिए मोटागांव में 17 अप्रेल को साधु संतों और साध्वियों का मंगल प्रवेश हुआ था। आपश्री ने मोटागांव, बांसवाड़ (राज.) के लिये होगा जहां श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर की प्रतिष्ठा दिनांक 21 अप्रेल को हुई। ✻ 18 अप्रेल : मंदिरजी में कुंभ व दीपक स्थापना, जवारारोपण, जलयात्रा, श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक महापूजन, हल्दी व मेंहदी कार्यक्रम, प्रभु भक्ति। ✻ 19 अप्रेल : पाटला पूजन, प्रभुजी के अट्ठारह अभिषेक पूजन, माणक स्तम्भ, तोरण कार्यक्रम, प्रतिष्ठित होने वाली प्रतिमाओं के चढ़ावे। ✻ 20 अप्रेल : प्रतिमाओं का नगर भ्रमण, शोभायात्रा, देवी हवन, देव अभिषेक व नाकोड़ा भैरव पूजन, भक्ति संध्या ''एक शाम नाकोड़ा भैरव के नाम''। ✻ 21 अप्रेल : आचार्य के प्रवचन, सम्मान समारोह, अभिजित मुर्हूत में श्री नाकोड़ा भैरव देव, लक्ष्मी देवी और सरस्वती देवी की मंगल प्रतिष्ठा, श्री शांति स्नात्र पूजन। ✻ 22 अप्रेल : द्वार उद्घाटन, सत्तर भेदी पूजन। **आगामी कार्यक्रम** ✻ 9 मई, बेसता महिना की महामांगलिक-उंठई (बड़नगर)। ✻ 12 से 13 मई, सीपोर से तारंगा तीर्थ का पैदल संघ (पूज्यश्री के गांव से)। ✻ 18, 20 मई, दो मंदिर में ध्वजा महोत्सव-विसनगर। ✻ 7 जून बेसता महिना की महामांगलिक-अहमदाबाद। ✻ 14 जून पू. आ.श्री की 41वीं दीक्षा तिथि, अर्हत् महापूजन-अहमदाबाद। ✻ 6 से 7 जून बेसता महिना की महामांगलिक-भावनगर। ✻ 19 जून चार्तुमास प्रवेश साबरमती धर्मशाला में पालीताना। श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना में आपश्री का आगामी चार्तुमास होने जा रहा है जहां चार्तुमासिक प्रवेश 19 जुलाई को होगा। **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण (नीमचवाले) है। चार्तुमास साबरमती धर्मशाला में होगा।**

युगलबंधु मालव जैनाचार्यश्री ने गौतमपुरा में प्रतिष्ठा का इतिहास बनाया

✻ धार में श्री वीरप्रभु का कल्याणक महोत्सव मना।

✻ चार्तुमास हुगली में होगा

गौतमपुरा- जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागरसूरीजी महाराज आयंबिल तप की 270 वीं ओलीजी आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्र रत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में यहां अप्रेल के द्वितीय सप्ताह में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव यादगार बन गया। करोड़ की बोलियां लगाकर मालव की समृद्धि का परिचय धर्मिष्ठों ने दिया बंधु युगल आचार्यश्री धार पधारे जहां आपकी निश्रा में वर्तमान तीर्थाधिपति परमात्मा श्री वीर प्रभु के जन्म कल्याणक चैत्र सुदी-13 दिनांक 21 अप्रेल को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया, इसके पूर्व दिनांक 19 अप्रेल को युवाओं के द्वारा अहिंसा रैली भी आयोजित की गई तथा 20 अप्रेल को नाकोड़ा बहुमंडल के द्वारा एक शाम महावीर के नाम से नृत्य आदि का आयोजन किया गया। 27 अप्रेल को को नूतन साध्वीजी श्री नित्यम्ज्योतिश्रीजी की बडी दीक्षा धार मे हुई इसके बाद **आपश्री का विहार हुगली कर्नाटक की ओर होगा जहां आपश्री का चार्तुमास होगा।**

मुमुक्षु हीना वेद संसार से विरक्त हो प्रभु वीर की श्रमणी बनी

डग- पूज्य आचार्यदेव श्री देवचंद्र सागर सूरीजी महाराज एवं आचार्यदेव श्री दिव्यचंद्रसागरसूरीजी महाराजा के साथ गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा के साथ साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वीवर्या श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में कुमारी हिना वेद परमात्मा श्री प्रभुवीर के संयम मार्ग को स्वीकार कर श्रमणी पद पर आरुढ़ हुई। श्री जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक श्री संघ डग में भव्य प्रवज्या के आयोजन के अंतर्गत 27 अप्रेल को हीना बहन का विरती वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। दिनांक 28 अप्रेल को विरती वाटिका भेरु महाराज मंदिर परिसर में पूज्य गुरु भगवंतों की निश्रा में दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई।

युवा लड़कियों के लिये ज्ञान शिविर

मुंबई- श्री नाकोड़ाधाम में पूज्य साध्वीवर्या आत्मयशाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री शासनयशा श्रीजी म.सा. की निश्रा में युवा लड़कियों के लिये ज्ञान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक 29 मई से 2 जून तक आयोजित शिविर में जैन धर्म के बारे विभिन्न अलग-अलग विषयों पर आधारित कार्यशाला होगी।

श्री वही पार्श्वनाथ में ओली आराधना

मंदसौर- यहां के समीप स्थित प्राचीन तीर्थ श्री वही पार्श्वनाथ दादा के दरबार में शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन पूज्य साध्वी श्री शुद्धिप्रसन्ना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-3 की निश्रा में किया गया। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक किया गया। महोत्सव में दिनांक 24 अप्रेल को पारणा के साथ आराधना की पूर्णाहुति होगी। दिनांक 21 अप्रेल चैत्र सुदी 13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।

लुणावर में ओली आराधना

लुणावर- गोड़वाड़ की धर्मनगरी लुणावर में वल्लभ समुदाय के आचार्य भगवंत श्री चिदानंद सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक किया गया। महोत्सव में दिनांक 24 अप्रेल को पारणा के साथ आराधना की पूर्णाहुति होगी। दिनांक 21 अप्रेल चैत्र सुदी 13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।

हिन्दी में आगमग्रंथ का विमोचन हुआ

नवसारी- राष्ट्र संत पूज्यपाद आचार्यदेवेशश्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य वर्धमान तपाराधक पूज्य मुनिराजश्री जयचन्द्रसागरजी म.सा. के द्वारा आगमग्रंथ के हिन्दी अनुवाद के तीन ग्रंथों का विमोचन श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर परिसर नवसारी में दिनांक 17 अप्रेल को किया गया।

गुंदेचा गार्डन में नवपद ओलीजी

मुंबई- श्री भक्ति पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन संघ गुंदेचा गार्डन में श्री शाश्वती नवपद ओलीजी का आयोजन 15 से 23 अप्रेल तक किया गया। सागर समुदाय के युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न मुनिश्री उदयरत्नसागरजी एवं मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में ओली आराधना हुई। मुणत परिवार संपूर्ण ओली के लाभार्थी रहे।

गांगाणी तीर्थ में ध्वजारोहण

जोधपुर- यहां के निकट प्राचीन तीर्थ श्री पार्श्वनाथ प्रभु के प्राचीन महातीर्थ की ध्वजारोहण के साथ देहरी के भूमि खनन पूजन मुर्हूत के साथ धर्मशाला के उद्घाटन का आयोजन किया गया। मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण द्वारा प्रेरित यह आयोजन 1 अप्रेल को हुआ।

आचार्यश्री की निश्रा में ओली आराधना

पोपनाड़- शाश्वती चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीजी म.सा. के सुशिष्य वर्धमान तपोनिष्ठ आचार्यदेव श्री वैराग्यरत्न सागरजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में किया गया। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक आयोजित शाश्वती चैत्र नवपद ओलीजी आराधना में दिनांक 21 अप्रेल चैत्र सुदी 13 को परमात्मा श्री वीरप्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।

पूज्यपाद जैनाचार्यश्री अशोक-सागर सूरीजी का सारस्वत संयम सत्कार 22 मई को

अहमदाबाद-81 वर्ष की आयुष्य 63 वर्ष की संयम साधना 27 वर्ष से नवकार महामंत्र के तीसरे पद पर विराजित 126 से अधिक शिष्य-प्रशिष्य संयमी आत्मन् की सम्पत्ति के मालिक 108 फीट श्री आदिनाथ दादा की प्रतिमा के स्वप्न दृष्टा, जम्बुद्वीप के मार्गदर्शक सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा का सारस्वत संयम सत्कार महोत्सव होने जा रहा है। दिनांक 22 मई को श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ देरासर परिसर साबरमती में यह संयम सत्कार महोत्सव होगा। पूज्य आचार्यदेव श्री जिनचंद्रसागरसूरीजी, श्री पूर्णचन्द्र सागर सूरीजी, श्री सौम्यचंद्रसागर सूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रा रहेगी।

साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी का चार्तुमास उज्जैन में

उज्जैन- पूज्य साध्वीवर्या मातृ हृदया श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री ऋषभदेवजी छगनीरामजी की पेढ़ी उज्जैन में होगा। विगत दिनों श्री संघ उज्जैन की विनंती पर बड़नगर में चार्तुमास की घोषणा हुई है।

नागेश्वर में चार्तुमास

नागेश्वर- श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मोक्षज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चार्तुमास निश्चित हुआ है।

✻ मुमुक्षु जीव लौकिक कारणों में अधिक हर्ष-विषाद नहीं करता।

✻ वायु से भी शीघ्रगामी क्या है ?- मन।
✻ तिनकों से भी अधिक असंख्य कौन है ?- चिंता।
✻ प्रवासी का मित्र कौन है ?- साथी।
✻ गृहवासी का मित्र कौन है ?- भार्या (पत्नी)।
✻ बीमार का मित्र कौन है ?- वैद्य।
✻ मरे आदमी का मित्र कौन है ?- दान।
✻ सभी प्राणियों का अतिथि कौन है ?- अग्नि।
✻ धर्म का स्वरुप क्या है ?- सबके अनुकूल रहना।
✻ यश की चरम सीमा क्या है ?- किसी की बुराई न करना।

✻ शत्रु या मित्र के प्रति रहे समदर्शिता, मान-अपमान में भी वही स्वभाव रहे, जीवन या मरण में भी न्यूनाधिक भाव न रहे, जन्म या मोक्ष में भी शुद्ध स्वभाव रहे, ऐसा अपूर्व अवसर कब आएगा ?

चार्तुमास.... चार्तुमास....!

✻ प.पू. गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय लेखेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती (बेन म.सा.) साध्वीजी श्री अनंतगुणा श्रीजी म.एवं आदि ठाणा-4 का चार्तुमास रतलाम में होने जा रहा है।

✻ पूज्य आचार्यदेव श्री विजय जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा का चार्तुमास श्री महावीर जैन श्वेतांबर पेढ़ी ट्रस्ट, भाण्डवपुर (जालोर) -343022 (राज.) में होगा।

✻ सेठ श्री धर्मचंद पेढ़ी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ सावड़ी में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री प्रशांतशेखरविजयजी आदि ठाणा का चार्तुमास सादड़ी नगर में होने जा रहा है।

✻ पूज्य आचार्यदेव श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश 17 जुलाई को श्री जैन पोसली पार्श्वनाथ श्वेतांबर ट्रस्ट, श्री पोसालिया जैन संघ पोसालिया जिला सिरोही-307028 (राज.)

✻ गौतमपुरा- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा., श्री पूर्णलताश्रीजी म.सा., तत्वरुचि श्रीजी म.सा., श्री दौलतलता श्रीजी म.सा., श्री आज्ञारुचि श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चार्तुमास इन्दौर एरोड्रम रोड़, स्थित अशोकनगर श्री संघ में घोषित हुआ।

✻ त्रिस्तुतिक गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नित्यसेन सूरीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास पेपराल में घोषित हुआ है।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास वालकेश्वर मुंबई में जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा

मुंबई- सागर समुदाय के सिरताज पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा उपाध्याय श्री विनीतसागरजी म.सा., मुनिराज श्री देवप्रभसागरजी म.सा., वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री विनम्रसागर जी म.सा. आदि साधु-साध्वी मंडल का आगामी चार्तुमास मुंबई वालकेश्वर के श्री प्रजेन्ट पैलेस जैन श्री संघ में होने जा रहा है।

✻ जो महापुरुष लगातार 36-36 वर्षों से श्री भगवतीजी आगम के चातुमार्सिक प्रवचन दे रहे है।✻ जो महापुरुष गुजरात के वाव के प्रथम आचार्य भगवंत है।✻ जो महापुरुष ज्योतिष के प्रकांड विद्वान है।✻ जो महापुरुष वचनसिद्ध है और जिनका संयम शुद्ध है।✻ जो महापुरुष 64 वर्ष से अखंड नवपदजी ओली की आराधना कर रहे है।✻ जो महापुरुष 9-9 वर्षीतप के आराधक है।✻ जो महापुरुष न्याय-व्याकरण-काव्य छंदशास्त्र-आगमों के विशिष्ट जाता है। ✻ जो महापुरुष संस्कृत भाषा के मास्टर है। ✻ जो महापुरुष भारतभर के अनेक संघों में वर्षीतप की प्रेरक बन हजारों तपस्विओं के उपकारी है। ✻ जो महापुरुष भोपावर तीर्थ अभ्युदयपुरम् कल्याण मंदिर तीर्थ जैसे तीर्थो के मुख्य प्रतिष्ठाचार्य है।✻ जो महापुरुष सरलता के भंडार है। ✻ ऐसे महासंयमी-महापवित्र महापुरुष अब सागर समुदाय के गच्छाधिपति है।

कारजण में पूज्य गच्छाधिपति श्री की प्रेरणा से वर्षीतप आराधना

कारजण- सागर समुदाय के सिरताज पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं वर्धमान तप आराधक पूज्य मुनिराज श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. की प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ पूज्य साध्वीवर्या आत्मज्ञा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से कारजण श्री संघ वर्षीतप आराधना का शुभारंभ 2 अप्रेल से होने जा रहा है। पूज्यश्री की भावना से अवगत होने के साथ श्री संघ में जाग्रति आई और 58 नाम अभी तक वर्षीतप करनेवाले आराधक के आ चुके है। वर्षीतप आराधना के मुख्य लाभार्थी श्रीमती चन्द्रकांता बहन महेन्द्रकुमार शाह है और नाम आने की संभावना है।

कन्या 99 यात्रा का आयोजन

पालीताना- पूज्य साध्वीवर्या श्री तत्वपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरीराज की कन्या 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 14 अप्रेल से होगा तथा पूर्णाहुति दिनांक 5 जून को होगी।

आशना श्रीवीरपथ स्वीकार करेंगी

मुंबई- भायंदर निवासी श्रीमती कल्पना बहन चेतनभाई मुथा की सुपुत्री कुमारी आशना बहन ने दीक्षित होकर परमात्मा श्री वीरप्रभु का पथ स्वीकार करने का निश्चय किया है। आपकी दीक्षा सूरत में दिनांक 15 अप्रेल को सम्पन्न हुई। दीक्षा दाता पूज्य आचार्य देवेश श्री कुलचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. है।

दादा के 18 अभिषेक और ध्वजा चढ़ाई जावेगी

पालीताना- श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिश्वर दादा के दीक्षा कल्याणक पर दादा के 18 अभिषेक के साथ दादा की 493 वीं वर्षगांठ पर मूलनायक प्रभु की जिनालय के शिखर पर ध्वजा चढ़ाने के लिये दिनांक 26 नवंबर को बोली हुई। बोली सुबह 10 बजे से भाताघर जय तलेटी पर के पास बोली गई। दादा के अट्ठारह अभिषेक दिनांक 2 अप्रेल को होंगे तथा वर्षगांठ पर ध्वजा 19 मई को चढ़ाई जावेगी।

56 परिवार को 56 फ्लेट का भूमि पूजन

रायपुर- साधर्मिक प्रकल्प के अंतर्गत 56 परिवार को 56 फ्लेट तैयार कर देने की अभिनव योजना के अंतर्गत भूमि पूजन का आयोजन दिनांक 4 अप्रेल को किया गया। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विनयकुशल मुनि गणिवर्य श्री आदि ठाणा साधु-साध्वी की निश्रा में यह आयोजन हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में उपधान तप और दीक्षा होने की संभावना है।

तपागच्छीय प्रवर समिति के कार्यवाहक आचार्यश्री का अमृत महोत्सव श्री वही पार्श्वनाथ में मनेगा

✻ चार्तुमास मंडार (राज.) में होगा।

सतना- सतना- तपागच्छीय प्रवर समिति कार्यवाहक पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत विजय श्री अभयदेव सूरीश्वर जी म.सा. एवं उनके शिष्यरत्न मार्ग दर्शक प.पू.आचार्य भगवंत श्री विजय मोक्षरत्न सूरीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद 24 अप्रेल तक सतना में विराजमान रहे। आपका विहार सतना प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद चल रहा है। आपश्री के जीवन के 75 वर्ष पूर्ण विक्रम संवत् 2081 चैत्र वदी-13 दिनांक 6 मई को होने जा रहा है।9 मई की बेसते महिने की महामांगलिक सागर के आसपास म.प्र. में होगी। इस समय आपश्री का विहार चल रहा होगा। आपश्री के अमृत महोत्सव का आयोजन जेठ सुदी-1 दिनांक 7 जून शुक्रवार को मध्यप्रदेश के मंदसौर के पास स्थित प्राचीन तीर्थ श्री वही पार्श्वनाथ में मनाया जायेगा। इस मंगल प्रसंग पर सम्पूर्ण देश के श्री संघों का आगमन होने जा रहा है। गुणानुवाद सभा तथा अन्य आयोजन होंगे। **आपश्री का चातुमार्सिक प्रवेश आषाढ़ सुदी-8 रविवार दिनांक 14 जुलाई को श्री मंडार जैन श्वेतांबर श्री संघ पोस्ट मंडार तहसील रेवदर जिला सिरोही मंडार (राज.) में होगा।**

12 जून को संयम पालरेचा रतलाम में श्री प्रभुवीर के श्रमण पथ को स्वीकार करेंगे

रतलाम- मुमुक्षु श्री संयम पालरेचा संयम जीवन ग्रहण कर बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल में सम्मिलित होकर परमात्मा प्रभुवीर के शासन को आगे बढ़ायेंगे। आपकी दीक्षा 12 जून को रतलाम में होगी। विगत दिनों बंधु बेलड़ी आचार्यश्री की निश्रा में अयोध्यापुरम् तीर्थ में आपको दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया गया था श्री देवासर चार थुई तपागच्छ श्री संघ के साथ आपके पिताश्री ने अयोध्यापुरम् तीर्थ में पहुंचकर पूज्यश्री से संयम पालरेचा की दीक्षा का मुर्हूत पूज्य आचार्यश्री प्रसन्नचंद्रसागरसूरीजी आदि ठाणा के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी का आगमन रतलाम दीक्षा में होगा। बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत की निश्रा में विगत दो वर्षो में रतलाम में होनेवाली यह चौथी दीक्षा है।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा का आयोजन सिर्फ श्रावक के लिये दिनांक 15 अप्रेल से होने जा रहा है। यह यात्रा पूज्य आचार्यदेवश्री संयमबोधि सूरीश्वरजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में होगी। सुनतर भवन पालीताना से यात्रा आरंभ होगी।

अर्हम युवा शिविर

पूना- श्री वर्धमान आगम मंदिर कात्रज पूना में पूज्य आचार्य भगवंत श्री विमलबोधि सूरिश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में अर्हम युवा शिविर का आयोजन 3 से 7 मई तक किया गया। शिविर 10 से 25 वर्ष के युवाओं के लिये आयोजित किया गया था। पूज्यश्री के तत्वज्ञान देने के साथ वर्धमान की परिस्थितियों के जैन युवाओं की धर्म समाज के प्रति भूमिका क्या है, उस पर सारभूत प्रवचन का आयोजन तथा विविध शिविर के अंतर्गत अनेक जानकारियां दी गई। युवाओं को अपनी जिंदगी में सही मार्ग दर्शन मिले इसके लिये शिविर उपयोगी रहा।

संक्रांति महोत्सव

विजयनगर- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्री नित्यानंद सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 12 अप्रेल को प्रवेश के साथ दिनांक 13 अप्रेल को संक्रांति महोत्सव मनाया गया।

श्री नागेश्वर तीर्थ में पारिवारिक शिविर

नागेश्वर- विश्व विख्यात श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी महाराज के समुदायवर्तीय पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री कुलबोधि सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में पारिवारिक शिविर का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 3 से 5 मई तक आयोजित शिविर में 1 से 55 वर्ष की वय वाले श्रावक-श्राविका भाग ले सकेंगे। 500/- रुपये रजिस्ट्रेशन फीस है। सम्बोधि परिवार मुंबई आयोजक है।

हमारे तीज-त्यौहार

1-वैशाख वदी-8	बुधवार	1-5-2024	पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री माणिक्यसूरीजी महाराजा का स्मृति दिन वि.सं. 2031
2-वैशाख वदी-10	शुक्रवार	3-5-2024	श्री सीमंधर स्वामीजी 20 विहरमान प्रभु के जन्मकल्याणक
3-वैशाख वदी-14	मंगलवार	7-5-2024	गुरु अस्त पश्चिम में
4-वैशाख सुदी-3	शुक्रवार	10-5-2024	अक्षय तृतीय-वर्षीतप पारणा, रोहिणी
5-वैशाख सुदी-10	शनिवार	18-5-2024	श्री वीर प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
6- वैशाख सुदी-11	रविवार	19-5-2024	शासन स्थापना दिवस, चतुर्विध संघ स्थापना
7-ज्येष्ठ वदी-5	मंगलवार	28-5-2024	पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री का स्मृति दिन वि.सं.2006
8-ज्येष्ठ वदी-6	बुधवार	29-5-2024	श्री शत्रुंजय तीर्थादिवंति की 493 वीं प्रतिष्ठा ध्वजारोहण

पंचक :- **आरम्भः-** वैशाख वदी-9, गुरुवार दिनांक 2-5-2024 समय-14.33 बजे से
समाप्तः-वैशाख वदी-13,सोमवार, दिनांक 6-5-2024 समय-17.44 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** वैशाख सुदी-6,सोमवार, दिनांक 13-5-2024 समय-11.25 बजे से
समाप्तः- वैशाख सुदी-7,मंगलवार, दिनांक 14-5-2024 समय-13.05 बजे तक

आगमोद्धारक का जुलाई 2024 का अंक
"चार्तुमास विशेषांक"
होगा।
आपकी रचनाएं भेजिए।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✻ ज्ञानी अपना उपजीवन, आजीविका भी पूर्व कर्म के अनुसार करता है; जिससे ज्ञान में प्रतिबद्धता आये इस तरह की आजीविका न करता है, न करने का प्रसंग चाहता है।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

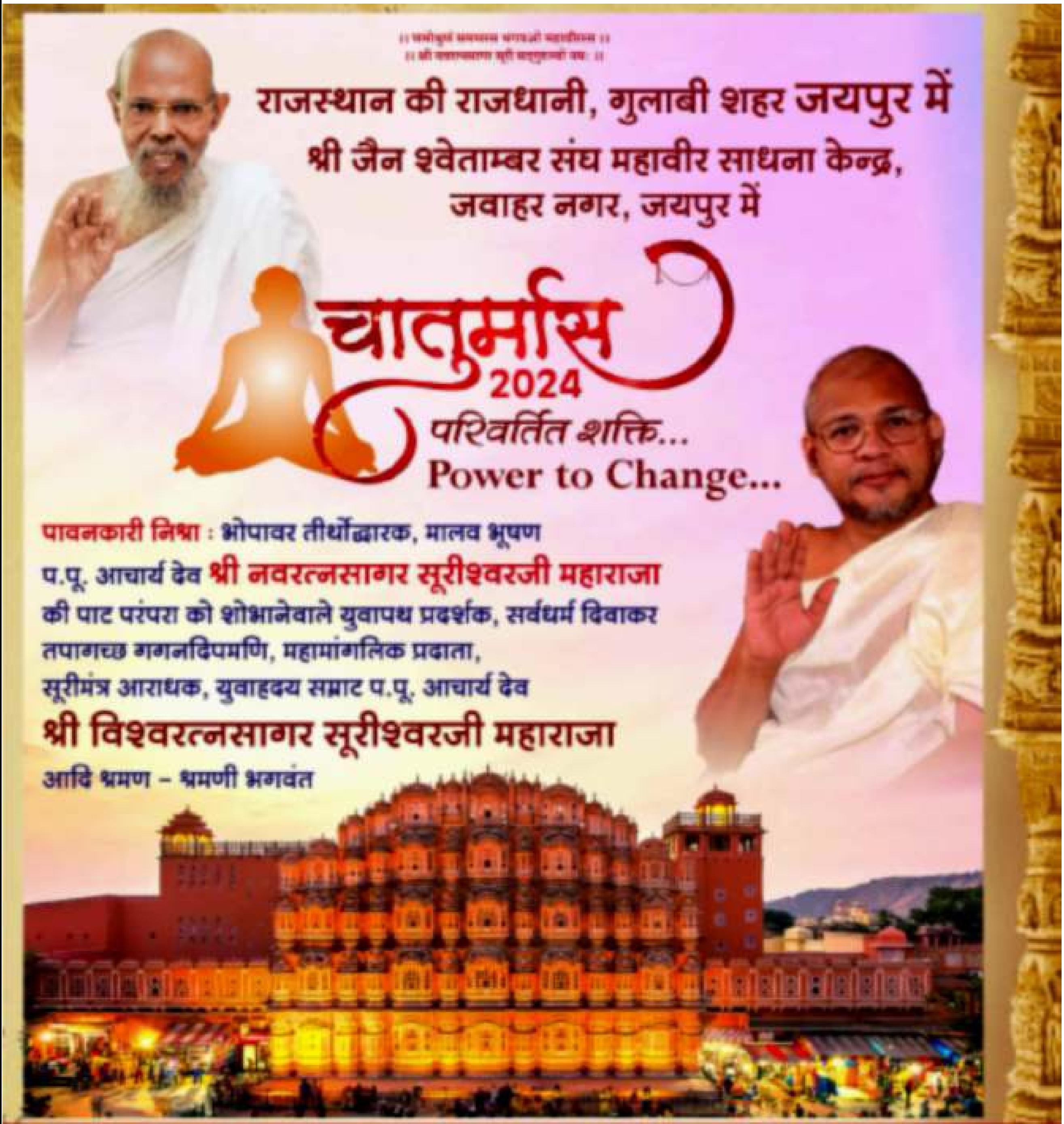

वर्ष 29 | वैशाख–ज्येष्ठ | मई–2024 | अंक 05 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन – 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897